



सिराज शिखा

राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय
बंजार, ज़िला कुल्लू (हि.प्र.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'बी' मूल्यांकित संस्थान

Faculty of Govt. College Banjar



From Left to right : Dr. Sharwan Kumar (Eco.), Dr. Dabe Ram (Comm.), Prof. Vikas Negi (maths), Dr. Yog Raj (Pub. Adm.), Dr. Vikas Kumar (Music), Prof. Atul Chaudhary (Phy.), Dr. Ramesh Yadav (Zoology), Dr. Joginder Thakur (Principal;Botany), Dr. Renuka Thapliyal (Geo.), Dr. Hemlata (Skt.), Prof. Leena Vaidya (Eng.), Dr. Duni Chand (Pol. Sc.), Prof. Ramanand (Socl.), Prof. Tikkam (History), Prof. Ishan Marval (Eng.)

अनुक्रम

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	संदेश (डॉ. अमरजीत के. शर्मा, निदेशक, उच्चतर शिक्षा)	03
02.	संदेश (डॉ. जोगिन्द्र ठाकुर, प्राचार्य)	04
03.	सम्पादकीय (लीना वैद्य, मुख्य संपादक)	05
04.	वार्षिक गतिविधियां	06–20
05.	सिराजोत्सव की सांस्कृतिक झलकियां	21–22
06.	प्राइड ऑफ अवर कॉलेज	24
07.	द अवार्ड विनर्ज़	25
08.	...एण्ड द ट्रैडिशन कन्टिन्यूज़	26
09.	संपादक मण्डल (छात्र)	27
09.	कविताएं, आलेख, लोक-कथाएं, कहानियां, विविध	29–50
10.	ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक परिवेश पर केन्द्रित प्राथमिक सर्वेक्षण	51–57
11.	खबरें	58



Kajal, B.A.II Year

**Statement about ownership and other particulars of *Siraj Shikha* Required
under rule-8 of press and registration of Books Act.**

**Form -(IV)
(see Rule-8)**

Place of publication : Banjar

Periodicity of its publication : Annual

Owner's Name : Dr. Joginder Singh Thakur

Address : Principal Govt. College, Banjar
Distt. Kullu (H.P.)

Name of Printing press. : Himtaru Prakashan Samiti, Kullu, H.P.

Nationality : Indian

Address : Near Main Post-Office, Dhalpur, Kullu.

Chief Editor's Name : Leena Vaidya
(Assistant Prof. English)

Nationality. : Indian

Address : Govt. College, Banjar
Distt Kullu, H.P.

I, Joginder Singh Thakur hereby declare that particulars given above are true and correct to best of my knowledge and belief.

Sd/-

Joginder Singh Thakur
Principal Govt.College Banjar,
Distt Kullu, Himachal Pradesh.

The views expressed by the writers are their own and the Editorial Board does not necessarily agree to them.

Editor-in-Chief

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)



Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001

Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dbe-sml-hp@gov.in



MESSAGE

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine .

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.


(Dr. Amarjeet K. Sharma)

प्राचार्य की कलम से...



“ज्ञान जब इतना अभिमानी हो जाये कि रो भी ना सके, इतना गंभीर हो जाये कि हंस भी न सके और इतना स्वार्थी हो जाये कि अपने सिवा किसी को न देख सके, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी खतरनाक बन जाता है।”

—खलील जिब्रान

प्रिय पाठकों

हम सभी के लिये यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सिराज शिखा' का सम्पादन व प्रकाशन कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है, जिसके लिये मैं पत्रिका की प्रधान-सम्पादक प्रो. लीना वैद्य तथा समस्त सम्पादकवृन्द को हार्दिक साधुवाद देता हूँ। इस बात पर भी अपनी सहमति प्रकट करता हूँ कि समय, व्यवस्था और परिवेश के अनुसार पत्रिका प्रारूप में वैज्ञानिक व तर्क आधारित चिन्तन का समावेश करने के लिये प्रतिवर्ष नवोन्मेषी पहल होनी चाहिये। यद्यपि प्रौद्योगिकी के इस युग में अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम सुलभ हैं किन्तु हमें अपने परम्परागत ज्ञान तथा आधुनिक विज्ञान का समन्वय अपने चिन्तन में लाना बेहद जरूरी है। हमारे युवा लेखक व पाठक दोनों के लिये यह जरूरी है कि अपने मौलिक चिन्तन को अपने स्थानीय सराजी परिवेश से जोड़कर संस्था तथा समाज के मध्य सेतु निर्माण के लिये स्वतंत्र सृजन करते रहें। सिराज शिखा मात्र महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों को पृष्ठों में सजाने की पहल नहीं है। यह पत्रिका सिराज क्षेत्र की अकादमिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक विलक्षणता का पर्याय है। मैं अपने महाविद्यालय परिवार (शिक्षकों, गैर-शिक्षक वर्ग तथा विद्यार्थियों) के लग्न, परिश्रम तथा प्रतिबद्धता को भी सहृदय अनुमोदित करता हूँ। भविष्य में हमारी युवा पौध समस्त विकारों से मुक्त होकर बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होकर एक प्रबुद्ध वृक्षरूपी नागरिक बनें, यही संस्थान की ओर से मेरी कामना है। हमें छोटे-छोटे प्रयासों से भविष्य के गर्भ में छिपे स्थूल परिवर्तनों का मार्ग चुनना है और समाज व राष्ट्र के प्रति पवित्र मन से समर्पित रहना है।

एक बार पुनः सभी को हार्दिक शुभकामनायें!

प्राचार्य
डॉ. जोगिन्द्र सिंह ठाकुर
राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय
बन्जार, (कुल्लू)

Editorial Board



Left to Right : Dr. Dabe Ram (Comm.), Prof. Vikas Negi (Sci.), Dr. Hemlata (Skt.), Dr. Joginder Thakur (Principal)
Prof. Leena Vaidya (Editor-in-Chief) Prof. Tikkam (Pahari), Prof. Ishan Marval (Eng.), Dr. Sharwan (Hindi)

Editorial

“Every step taken in mindfulness brings us one step closer to healing ourselves and the planet”

Thich Nhat Hanh

Creativity in any form reflects the heightened state of mindfulness. The creation of a poem, fantasy, fiction, folklore, story or any other art form indicates the mindfulness of people taking the initiative to explore their capabilities and express their hitherto unexpressed thoughts. *Siraj Shikha* provides a multilingual platform for students’ creative genius allowing them to wander in the realm of imagination and experience. The magazine espouses the institutional spirit based on collective efforts, thoughts and aspirations of students and staff members.

The tedious task of editing this magazine was made possible by the sincere support of Dr. Dabe Ram, Prof. Vikas Negi, Dr. Hemlata, Prof. Tikkam, Prof. Ishan, Dr. Sharwan (Editorial Board) and Dr. Vikas Kumar. The invaluable inputs of the Editorial Board to improve the quality and presentation of the magazine along with the hard work put in by the student editors and the budding writers will surely stir the minds of young readers, and make them ponder and reflect on various aspects of life.

I sincerely thank Dr. Joginder Thakur (Principal) for showing unwavering faith in the Editorial Board and giving us a free hand to exercise our collective creative instincts to experiment with the accepted format of the magazine.

Happy Reading!

Leena Vaidya
Editor-in-Chief

वार्षिक-गतिविधियां

सत्र : 2022-2023

19 मई 1999 में महाविद्यालय के प्रारम्भ में यहाँ मात्र 5 प्राध्यापक तथा 84 विद्यार्थी थे। आज विद्यार्थियों की संख्या 986 पहुंच गई है। सत्र 2022-23 में संस्थान के शैक्षणिक सत्र में विद्यार्थियों की कुल संख्या 986 है, जिसमें 404 छात्र व 582 छात्राएं हैं। शैक्षणिक कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए 17 प्राध्यापक तथा 10 गैर शिक्षक कर्मचारी कार्यरत हैं। अक्टूबर 20 से 22, 2016 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा संस्थान को बी' ग्रेड प्रदान किया गया है। इस शिक्षण संस्थान में कला संकाय भवन, जिसमें विभिन्न प्रयोगशालाएँ, एक सेमिनार हॉल, परीक्षा हॉल, आई. टी. प्रयोगशाला और पुस्तकालय हैं। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल (IQAC) का गठन भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के तहत किया गया है। महाविद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ खेल-कूद, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) थल स्कन्ध, रोवर्स-रेंजर और विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों को भी समान महत्त्व दिया जाता है। वर्तमान में महाविद्यालय में कुल 24 पदों में से 17 पदों पर शिक्षक कार्यरत हैं तथा 07 पद रिक्त हैं। इसी प्रकार गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग के कुल 15

They Made us Proud!

यह हम सब के लिए गर्व का विषय है कि विद्यार्थियों की मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर इस वर्ष इस संस्थान के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। 2022 में महाविद्यालय के कुलदीप एवं जानवी शर्मा (बी.एस.सी. नॉन मैडिकल) ने विज्ञान संकाय में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय स्नातक परीक्षा की



योग्यता क्रम सूची में क्रमशः दूसरा व नवां स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। 2022 में जिन विद्यार्थियों ने इस महाविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की है, उन में से 1 विद्यार्थी ने केन्द्रीय विश्वविद्यालय हि.प्र., 5 विद्यार्थियों ने हि.प्र. विश्वविद्यालय शिमला, 1 विद्यार्थी ने जी.बी.पंत मैमोरियल राजकीय महाविद्यालय रामपुर बुशहर और 3 विद्यार्थियों ने राजकीय महाविद्यालय कुल्लू में स्नातकोत्तर के विभिन्न संकायों में प्रवेश लिया तथा बहुत से छात्र-छात्राओं ने विभिन्न बी.एड. संस्थानों में प्रवेश लिया।

महाविद्यालय के छात्र शौर्य शर्मा (बी.एस.सी. भौतिकी प्रमुख) तृतीय वर्ष, ने फरवरी में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित आईआईटी जे.ए.एम. 2023 परीक्षा उत्तीर्ण कर 540वां स्थान प्राप्त कर न केवल अपने माता पिता का नाम रोशन किया अपितु सम्पूर्ण महाविद्यालय को गौरवान्वित कर छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। शौर्य शर्मा अपनी इस उपलब्धि के लिए प्रशंसा के पात्र है।



पदों में से 10 पद पर कर्मचारी नियुक्त हैं तथा 05 पद रिक्त हैं।

छात्रवृत्तियाँ

सत्र 2022-23 में अलग-अलग योजनाओं के द्वारा विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गई जिसका कुल योग 5,77,200 रु0 है।

विकासात्मक कार्य

आधुनिक युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा का स्वरूप भी बदल रहा है। इसलिए उत्कृष्ट महाविद्यालय योजना तथा रुसा-11 अनुदान के तहत महाविद्यालय में सूचना एवं प्रौद्योगिकी (Information and Technology) सेक्टर के विस्तारीकरण पर अधिक बल दिया गया है।

महाविद्यालय की वेबसाईट विकसित की गई है, जिसमें विद्यार्थियों तथा अन्य हितधारकों को जानकारी प्रदान करने के लिए दैनिक गतिविधियों से सम्बन्धित सूचना का अभिभारण (Upload) किया जाता है।

महाविद्यालय में प्रवेश से लेकर कार्यालय का कार्य ऑनलाईन प्रबन्धन प्रणाली (Online Management System) के द्वारा किया जाता है जिससे सभी विद्यार्थी इस सुविधा से लाभान्वित हो रहे हैं तथा वित्तीय रिपोर्ट भी स्वचलित रूप से उत्पन्न होती है। विद्यार्थियों के संचार कौशल विकसित करने हेतु भाषा प्रयोगशाला (Language Lab) और भूगोल विषय में भौगोलिक सूचना प्रणाली से संबंधित GIS Lab स्थापित हो चुकी



है। महाविद्यालय में खेल अवसंरचना (Sports Infrastructure) का जो कार्य पिछले सत्र में आरम्भ किया गया था वह इस सत्र में पूर्ण हो चुका है।

उत्कृष्ट महाविद्यालय योजना एवं रुसा-II के अन्तर्गत वर्षाजल



संरक्षण (Rain Water Harvesting) तथा पानी की निकासी, कैंटीन उन्नयन (Canteen Upgradation) का कार्य पूर्ण हो चुका है। महाविद्यालय



परिसर में वाहनों की पार्किंग के लिए हिमुडा (Himachal Pradesh housing & Urban Development Authority) द्वारा कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। पार्किंग स्थल बनने पर सभी विद्यार्थी, अध्यापक एवं आगन्तुक इस सुविधा से लाभान्वित हो सकेंगे। कॉलेज की सड़क पक्का करने का कार्य, अक्षम छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय, biodegradable Plant, U Shape Drain का कार्य होना अभी बाकी है जिसके लिए लोक निर्माण विभाग के लिए राशि दे दी गई है। वर्तमान सत्र में महाविद्यालय में 27 कम्प्यूटर, बैटरी बैकअप, दो फोटोस्टेट मशीन, विभिन्न खेल उपकरण, पुस्तकें, प्रयोगशाला उपकरण तथा फर्नीचर उपलब्ध करवाया गया।

पुस्तकालय



महाविद्यालय के पुस्तकालय में छात्र एवं छात्राएं लगभग 7053 पुस्तकों, 5 पत्रिकाओं तथा 5 समाचार पत्रों का लाभ उठा रहे हैं। पुस्तकालय में पुस्तकों की डिजिटल केटेलाॅगिंग कर बार कोडिंग की गई है और इसे ऑनलाईन जोड़ने की प्रक्रिया चल रही है। पुस्तकालय में INFLIBNET N-List सदस्यता उपलब्ध करवा दी गई है जिसका लाभ प्राध्यापक शोध कार्य के लिए कर सकते हैं। इसी कार्य के लिए पुस्तकालय में शोध केन्द्र भी स्थापित किया गया है। पत्रिकाओं में साहित्य अमृत, मीरायन, योजना, अखंड ज्योति शामिल है। समाचार पत्रों में 'द ट्रिब्यून', 'द इंडियन एक्सप्रेस', 'पंजाब केसरी', 'अमर उजाला', 'दिव्य हिमाचल' प्रमुख है।

सूचना प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला

महाविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला में 20 कम्प्यूटर एक डिजिटल पोडियम तथा प्रोजेक्टर की सुविधा उपलब्ध है। अध्यापन कार्य रुचिपूर्ण बनाने एवं नई तकनीक से जोड़ने हेतु शैक्षणिक सत्र 2022-23 में तीनों संकाय की कक्षाएं समय-समय पर इस प्रयोगशाला में लगायी जाती हैं। विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम एवं ऑनलाईन परीक्षा एवं छात्रवृत्ति फॉर्म भरने की सुविधा प्रयोगशाला में उपलब्ध करवाई गई है।

महाविद्यालय पत्रिका

प्रौद्योगिकी के इस दौर में छात्रों की मौलिक लेखन प्रतिभा तथा वैचारिक चिंतन को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से संस्थान की पत्रिका 'सिराज शिखा' प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है। जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर विचार एवं भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

अध्यापक-अभिभावक संघ

संस्थान के विभिन्न विकासात्मक कार्यों, छात्रों, अभिभावकों और महाविद्यालय प्रशासन के बीच बेहतर तालमेल के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार के नियमानुसार महाविद्यालय में अध्यापक-अभिभावक संघ का गठन किया गया। इस वर्ष संस्थान के प्राचार्य डॉ. जोगिन्द्र सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में सत्र 2022-23 के लिए अध्यापक अभिभावक संघ के लिए निम्न पदाधिकारियों का चुनाव किया गया जिसमें प्रधान श्री जय सिंह ठाकुर, उप-प्रधान श्री भूपेन्द्र सिंह, सचिव डॉ. डाबे राम, सहसचिव श्रीमती आशा देवी तथा मुख्य सलाहकार श्री शेर सिंह नेगी को मनोनीत किया गया है।

पूर्व छात्र संघ

2018-19 में प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में पूर्व छात्र संघ का गठन सर्वसम्मति से 14 जुलाई 2018 को किया गया था। इस संघ के वर्तमान अध्यक्ष श्री गंगे राम व सचिव प्रो. टिकम राम हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय



महाविद्यालय में सभी वर्ग के विद्यार्थियों के लिए तथा विशेषकर नियमित अध्ययन से वंचित विद्यार्थियों के विकास के लिए इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय का केन्द्र सन् 2008 में अस्तित्व में आया। इस अध्ययन केन्द्र में 550 छात्र पंजीकृत हैं। इस समय यहां कला, वाणिज्य, पर्यटन तथा लाईब्रेरी साइंस आदि क्षेत्रों में सर्टीफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है। महाविद्यालय की वैबसाइट पर इग्नू के लिए एक अतिरिक्त पोर्टल बनाया गया है, जिसमें इग्नू के कार्यों से संबंधित जानकारी समयानुसार उपलब्ध करवाई जाती है।

प्राध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धियाँ

महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक जहाँ विद्यार्थियों के प्रति निष्ठावान हैं, वहीं ज्ञानार्जन एवं शोध कार्यों में भी लीन हैं। संस्थान के प्राध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण इस प्रकार है:-

– डॉ. जोगिन्दर सिंह ठाकुर ने 14 मार्च 2023 को ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क रिचर्स सेंटर शाईरोपा द्वारा आयोजित कार्यशाला “Capacity Building of stakeholder on cultivation & Conservation of Medicinal Plants” में “Non Timber Forest Product (NTFC) & Traditional Knowledge of Medicinal Plants” नामक विषय पर स्त्रोत वक्ता के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत किया।

– डॉ. रेनुका थपलियाल (भूगोल विभाग) द्वारा सत्र 2022–23 में निम्नलिखित कार्यक्रम पूर्ण किए गए।
99-Online training course on Geo-spatial Applications for Forest Ecosystem Analysis conducted from June 20th to June 25th, 2022.

100-IIRS Outreach Programme on Machine Learning to Deep Learning: A Journey for Remote Sensing Data Classification from 4th July to 8th July 2022.

06-IIRS Outreach Programme on Fundamentals of Remote Sensing & GIS Technology from 14th September-28th September 2022.

– प्रो. अतुल चौधरी (भौतिक विज्ञान) ने रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो सप्ताह के पुनश्चर्या कोर्स (Refresher Course) को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

– प्रो. रामानन्द (समाजशास्त्र विभाग) ने कॉमकैड द्वारा आयोजित दो दिवसीय “Research Paper Writing” ई-कार्यशाला को सफलतापूर्वक पूर्ण किया तथा साथ ही राज ऋषि शासकीय स्वशासी महाविद्यालय अलवर (राजस्थान) द्वारा आयोजित “Greener Living: Reduce, Reuse and Recycle” विषयक अंतर्राष्ट्रीय अल्पकालिक कार्यक्रम-6 में भाग लिया।

– डॉ. डाबे राम (वाणिज्य विभाग) ने रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो सप्ताह के पुनश्चर्या कोर्स (Refresher Course) को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

– प्रो. लीना वैद्या (अंग्रेजी विभाग) ने अगस्त 2022 में “Social Location and Struggle of selfhood in Laxmi’s Me Hijra Me Laxmi and Revthi’s The Truth About Me” नामक विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल The Criterion में अपना शोध पत्र प्रकाशित किया।

30 दिसम्बर 2022 को “Invisible in a Body: Personhood and Selfhood in Life Narratives of Hijras” नामक विषय पर हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में अपना शोध प्रबन्ध (Ph.D. Thesis) सबमिट किया।

– डॉ. श्रवण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग) ने रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से 4 सप्ताह का अभिविन्यास कार्यक्रम (Orientation Programme) पूर्ण किया।

सिंधु संस्कृति केन्द्र लेह लद्दाख में आयोजित सतत् पर्वतीय विकास में पर्यटन अनुप्रयोग नामक विषय पर अक्टूबर माह में चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

अक्टूबर माह में “राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा भोटी भाषा का महत्व” नामक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में “भोटी भाषा: उद्भव एवं विकास” विषय पर हिमालयी बौद्ध संस्कृति विद्यालय मनाली में पत्र प्रस्तुत किया।

दिसम्बर माह में राजकीय महाविद्यालय बासा गोहर में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी “संस्कृति, विज्ञान, आध्यात्मिकता और शिक्षा” में “विपश्यना: आत्म रुपान्तरण का मार्ग” नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

24 फरवरी 2023 को राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् सोलन में स्त्रोत वक्ता के रूप में नशाखोरी का अर्थशास्त्र विषय पर अपने विचार रखे।

– डॉ. दुनी चन्द (राजनीति शास्त्र) ने रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो सप्ताह के पुनश्चर्या कोर्स (Refresher Course) को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

1. फरवरी 2023 को राजकीय महाविद्यालय कुल्लू में आयोजित एन.एस.एस. शिविर में “Career Opportunities in Teaching” विषय पर व्याख्यान दिया।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन संस्थान के राजनीति शास्त्र के स्नातकोत्तर कार्यक्रम के प्रथम सेमेस्टर के लिए “Indian Politics-I: Political Institutions” विषय पर पुस्तक लिखी।

– **प्रो. ईशान मार्वल**, अंग्रेजी विभाग ने 20 जुलाई से 18 अगस्त 2022 को रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से Faculty Induction Programme पूर्ण किया।

21 जनवरी 2022 को “Where the Gods Dwell” नामक पुस्तक की समीक्षा The Tribune में प्रकाशित हुई। अगस्त 2022 में हिमाचल प्रदेश भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिका “विपाशा” में दो कविताएं प्रकाशित की।

– **डॉ. विकास कुमार**, संगीत विभाग ने 20 जुलाई से 18 अगस्त 2022 को रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से Faculty Induction Programme पूर्ण किया।

मार्च 2023 में डॉ. विकास कुमार ने संगीत विषय में विद्या-वाचस्पति की उपाधि हासिल कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

एन.सी.सी.



2020–21 में 39 कैडेट्स की ईकाई को स्वीकृति मिली। वर्तमान में महाविद्यालय में 38 कैडेट्स का नामांकन हुआ है जिसमें 25 छात्र एवं 13 छात्राएं सम्मिलित हैं। 2022–23 में एन.सी.सी. अधिकारी प्रो० टिक्कम राम के नेतृत्व में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया।

– विश्व योग दिवस 2022 के थीम “मानवता के लिए योग” के अनुरूप 21 जून 2022 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस महाविद्यालय में मनाया गया।

– फरवरी 2022 में 13 कैडेट्स ने ‘BEE’, सर्टिफिकेट परीक्षा पास की।

– प्रथम वर्ष में 14 कैडेट्स, 9 एस डी, 5 एस डब्ल्यू, एन.सी.सी. आर्मी विंग में चुने गए।

– सीनियर अंडर ऑफिसर ज्योतिरादित्य ठाकुर ने धर्मशाला में 16 अगस्त से 30 अगस्त 2022 तक आयोजित 15 दिवसीय आर्मी अटैचमेंट कैम्प में भाग लिया।

– नवम्बर 2022 में 24 कैडेट्स (16 एस.डी, 8 एस.डब्ल्यू) ने 239 ट्रांजिट कैम्प पंडोह में आयोजित 7 दिवसीय ए. टी. सी.



में भाग लिया। इस शिविर के दौरान टैंट पिचिंग प्रतियोगिता में ज्योतिरादित्य व युवराज प्रथम स्थान पर रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी कॉलेज की एन. सी. सी. यूनिट ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- ए.टी.सी. कैम्प 235 में महाविद्यालय के एन.सी.सी. यूनिट का ओवरऑल बैस्ट घोषित किया गया।
- फरवरी 2023 में आयोजित 'BEE, सर्टिफिकेट, 'CEE, सर्टिफिकेट परीक्षाओं में क्रमशः 12,12 विद्यार्थी परीक्षा में बैठे।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)



सत्र 2022-23 के दौरान NSS स्वयं सेवियों की गतिविधियां इस प्रकार से है:



- 8 अगस्त 2022 को घर-घर तिरंगा अभियान के अन्तर्गत डॉ. दुनी चन्द ने "विश्व गुरु भारत" पर व्याख्यान दिया।
- 10 अगस्त 2022 को पौधारोपण अभियान के दौरान "रखाल" के 300 पौधे महाविद्यालय परिसर में रोपित किए गए।



- 12 अगस्त 2022 को प्रभात फेरी, तिरंगा-यात्रा और भारत की सांस्कृतिक धरोहर विषय पर कार्यक्रम आयोजित किए गए।
- 13 अगस्त 2022 को "आज़ादी-2.0" विषय पर प्रो. ईशान मार्वल द्वारा एक विशेष व्याख्यान दिया गया।
- 15 अगस्त 2022 को महाविद्यालय परिसर में स्वतन्त्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया इसके अतिरिक्त



महाविद्यालय की स्वयंसेवी ईकाई के 18 स्वयंसेवी उपमण्डल स्तरीय कार्यक्रम में शामिल हुए।

- 6 सितम्बर 2022 को महाविद्यालय प्राचार्य की अध्यक्षता में एन.एस.एस. सलाहकार समीति का गठन किया गया।
- 9 सितम्बर 2022 को राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एन.डी. आर.एफ) द्वारा आयोजित मॉकड्रिल में स्वयंसेवियों ने बढ़-चढ़कर



- भाग लिया।
- 14 सितम्बर 2022 को हिन्दी दिवस के अवसर पर एन.एस.



किया गया। इसी के अन्तर्गत 26 नवम्बर को एन.एस.एस. द्वारा गोद लिए गए गांव बला में जागरुकता अभियान चलाया गया व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

– 28 नवम्बर 2022 को राजकीय

महाविद्यालय पनारसा में धीरज (बी.ए. द्वितीय वर्ष) व ओमरिता (बी.एससी. तृतीय वर्ष) ने जिला स्तरीय प्री. आर. डी. कैम्प में महाविद्यालय का नेतृत्व किया तथा **ओमरिता ने राज्य स्तरीय प्री. आर. डी. कैम्प और North Zone Pre-RD camp में Lovely Professional University फगवाड़ा में महाविद्यालय**



एस. ईकाई द्वारा एक दिवसीय स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया।

– 15 सितम्बर 2022 को महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग द्वारा एन.एस.एस. ईकाई को आवश्यक सामग्री स्वैच्छिक दान के रूप में दी गई।

– एन.एस.एस. ईकाई द्वारा क्रमशः 16 व 24 सितम्बर को ओजोन दिवस व एन.एस.एस. स्थापना दिवस का आयोजन



का प्रतिनिधित्व किया।

– 31 नवम्बर 2022 को पोषण माह के उपलक्ष्य पर आहार



प्रदर्शनी, पोषण रैली व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

– महाविद्यालय के कुल 16 स्वयंसेवियों ने राजीव गांधी युवा विकास संस्थान चण्डीगढ़ से चार दिवसीय राष्ट्रीय कार्यक्रम में अलग-अलग समय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।



– समय-समय पर महाविद्यालय परिसर में व्यक्तित्व विकास, सतक्रता जागरुकता, सप्ताह नशा मुक्ति अभियान व परिसर सौन्दर्यीकरण जैसे कई शिविरों का आयोजन किया गया।



– महाविद्यालय में समय-समय पर राष्ट्रीय संविधान दिवस, विश्व एड्स दिवस, अन्तरराष्ट्रीय स्वयंसेवी दिवस, विश्व मानवाधिकार दिवस, अग्नि सुरक्षा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



– 24 से 30 दिसम्बर 2022 तक ईकाई द्वारा सात दिवसीय विशेष आवासीय शिविर का आयोजन किया गया।

– नरेश कुमार व हिमानी नेगी (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने पंजाबी

विश्वविद्यालय पटियाला में राष्ट्रीय एकीकरण शिविर में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

– 21 नवम्बर 2022 को सामाजिक सर्वेक्षण अभियान के अन्तर्गत पूरी ईकाई को 13 उप समीतियों में विभाजित कर विभिन्न सामाजिक तथा सामुदायिक विषयों पर आधारित संवाद समाज के प्रबुद्ध वर्गों युवाओं, महिलाओं व बुजुर्गों से कायम कर यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्थानीय समाज की समृद्धि तथा खुशहाली शिक्षित युवाओं तथा समाज के प्रबुद्ध जागरुक वर्ग की परस्पर सहभागिता से संभव है।

– 9 से 12 अक्टूबर को केन्द्र शासित प्रदेश लेह में "एकीकृत हिमालयी प्रयास" संस्था के सौजन्य से चार दिवसीय पर्यावरण तथा अवशिष्ट प्रबंधन विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में टार्जन भारती, उषा ठाकुर तथा ईकाई समन्वयक डॉ. श्रवण कुमार ने महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।



रोवर्स एंड रेंजर्स



राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय बंजार की रोवर्स एंड रेंजर्स ईकाई में रोवर लीडर डॉ. दुनी चन्द तथा रेंजर लीडर डॉ. हेमलता के नेतृत्व में 12 रावर्स तथा 24 रेंजर्स पंजीकृत हैं। सत्र 2022-23 में इस इकाई द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया।

- 30 अगस्त से 4 सितम्बर 2022 तक रोवर खेमराज, रेंजर अंजली ठाकुर, नीलम देवी तथा श्वेता ठाकुर ने राज्य प्रशिक्षण केन्द्र रिवालसर में निपुण टैस्टिंग कैम्प में भाग लिया।
- सितम्बर 2022 को इकाई द्वारा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक



- नवम्बर 2022 में इकाई के सदस्यों ने अग्नि शमन केन्द्र बंजार में मॉक ड्रिल के माध्यम से आपदा प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की।

- 18 से 27 जनवरी 2023 तक रोवर खेमराज, रेंजर हिमानी ठाकुर तथा वीना रॉय ने राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय कोटशेरा में आयोजित आर.डी. कैम्प में भाग लिया और वहां से चयनित होकर राज्य स्तरीय गणतन्त्र दिवस परेड में शिमला में भाग लिया। इसके अतिरिक्त इकाई के सदस्यों ने सम्पूर्ण अकादमिक सत्र में महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।



विद्यालय बंजार, मंगलौर, चनौन तथा बालीचौकी में जाकर विद्यार्थियों का स्काउटिंग के विषय में जानकारी दी गई व उन्हें स्काउटिंग का सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया गया।

- 16 से 21 नवम्बर 2022 तक रोवर खेमराज, निखिल ठाकुर और रेंजर अंजली ठाकुर, पवना देवी, जया देवी, हिमानी ठाकुर तथा वीना राय ने राज्य प्रशिक्षण केन्द्र रिवालसर में प्री.आर.डी. कैम्प में भाग लिया।



जीविकोपार्जन परामर्श एवं प्रस्थापन प्रकोष्ठ (Career Counseling and Placement Cell)



Career Counseling and Placement Cell, प्रो. लीना वैद्या के कुशल नेतृत्व में छात्रों को अपने भविष्य के प्रति जागरूक बनाने तथा रोज़गार के विभिन्न अवसर प्रदान करने एवं छात्रों को सुझाव देने के लिए नियमित रूप से कार्य कर रहा है। सत्र 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट महाविद्यालय योजना के अन्तर्गत जीविकोपार्जन परामर्श प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों का वर्णन इस प्रकार है:-

– 29 अगस्त 2022 को प्रधानाचार्य की उपस्थिति में तृतीय वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए “Communication Skills in English” विषय पर एक Interactive Session (परस्पर संवादात्मक सत्र) का आयोजन किया गया। इस दौरान श्री भूपेश कुमार TEFL/ TESOL Trainer ने “Importance of English Communication in Present Time” पर विद्यार्थियों के साथ अपने विचार सांझा किए।

– 12 अक्टूबर 2022 को महाविद्यालय में “Website Development-Programme” के बारे में छात्र छात्राओं को अवगत करवाया गया। यह कार्यक्रम SOUL Education and Welfare Society द्वारा आयोजित किया गया था जिसमें श्री महेन्द्र जी ने “Website Designing” की संभावनाओं पर विद्यार्थियों से विचारों का आदान-प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ईच्छुक विद्यार्थियों के लिए दो सप्ताह चलने वाली एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 10 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

– 10 मार्च 2023 को प्रकोष्ठ द्वारा सिविल सेवाओं तथा अध्यापन क्षेत्र में रोज़गार के अवसर विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. दूनी चन्द तथा प्रो. ईशान मार्वल ने सिविल सेवाओं तथा अध्यापन क्षेत्र में रोज़गार के अवसर तथा उनसे संबंधित तैयारी के बारे में उपस्थित विद्यार्थियों को जानकारी दी तथा उनके विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए।

महिला प्रकोष्ठ (Women Cell)



महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने एवं महिला सशक्तिकरण एवं बाल संरक्षण हेतु सत्र 2022-23 लिए महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। इसकी संयोजक डॉ. रेणुका थपलियाल है। इस प्रकोष्ठ के अन्तर्गत वर्ष 2022-23 में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया।

– 15 नवम्बर 2022 को महाविद्यालय में “नशा मुक्त भारत अभियान” के अन्तर्गत निबंध लेखन, पोस्टर मेकिंग, चित्रकला आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

– 2 मार्च 2023 को डॉ. सतीश चौहान के नेतृत्व में एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 150 विद्यार्थियों के रक्त समूह (Blood Group) एवं





हीमोग्लोबिन की जांच की गई एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारी दी गई।

– 6 मार्च 2023 में क्षेत्रीय चिकित्सालय कुल्लू के सहयोग से डॉ. सत्यव्रत वैद्य ने छात्र-छात्राओं को अवसाद, विषाद, निराशा तथा अन्य स्वास्थ्य सम्बंधी विषय पर जानकारी दी तथा डॉ. रीमा घई ने व्यक्तिगत स्वच्छता तथा महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों के साथ साझा की तथा उनके प्रश्नों के उत्तर दिए।

रैड रिबन क्लब / ईको क्लब



1 दिसम्बर 2022 को रैड रिबन क्लब द्वारा विश्व एड्स दिवस महाविद्यालय के प्राचार्य की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर वाद-प्रतिवाद, नारा लेखन, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 15 फरवरी 2023 को दो विद्यार्थियों ने प्रो. लीना वैद्य के नेतृत्व में क्षेत्रीय अस्पताल कुल्लू में प्रशिक्षण कार्य में भाग लिया। राजकीय महाविद्यालय बंजार में ईको क्लब द्वारा समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

Early Infant Diagnosis (EID)

Timeline: 48-72 hours, 6 weeks, 12 months, 18 months

Risk Stratification of HIV Exposed Infant

Low-risk infants: Infants born to mothers with suppressed viral load (<1000 copies/ml) during pregnancy up to delivery after 32 weeks of pregnancy up to delivery.

High-risk infants: Infants born to HIV-positive mothers, not on ART; Maternal viral load not detectable; Infants born 32 weeks of pregnancy or earlier; Mother newly identified as HIV-positive within 8 weeks of delivery.

Infants Birth Weight	NVP Daily Dose	AZT Daily Dose
Infants with birth weight <2500 g	2 mg (1ml) once daily	5 mg/dose twice daily
Birth weight 2500 to 2300 g	10 mg (1ml) once daily	10 mg/dose (1ml) twice daily
Birth weight = 2300 g	15 mg (1.5ml) once daily	15 mg/dose (1.5ml) twice daily



सड़क सुरक्षा क्लब



इस महाविद्यालय में प्रो. विकास कुमार के कुशल नेतृत्व में "सड़क सुरक्षा क्लब" द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। 09 मार्च 2023 को सड़क सुरक्षा क्लब द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें नारा लेखन, पोस्टर मेकिंग तथा भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। नोडल अधिकारी प्रो. विकास कुमार द्वारा विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त 23 मार्च 2023 को महाविद्यालय में "सड़क सुरक्षा" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री खजाना राम DSP बंजार ने सड़क सुरक्षा सम्बन्धी विषयों की जानकारी दी।



आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ



इस अवसर पर इंस्पेक्टर शशी और सब-इंस्पेक्टर अनिल कुमार व उनकी टीम ने सी. पी.आर. ब्लीडिंग (इंटरनल/एक्सटर्नल) चैकिंग, भूकम्प और



आगजनी जैसी अपादाओं के प्रबंधन के संदर्भ में मॉकड्रिल का प्रदर्शन किया। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को आपदाओं के समय बरतने वाली सावधानियों के विषय में बताया गया।

महाविद्यालय का आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ डॉ. दुनी चन्द जी के कुशल नेतृत्व में कार्य कर रहा है जिसके अन्तर्गत 9 सितम्बर 2022 को महाविद्यालय में त्वरित कार्यवाही और आपदा प्रबंधन समीति तथा राष्ट्रीय आपदा अनुक्रिया बल (NDRF) के सहयोग से आपदा प्रबंधन से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



खेल-कूद संबंधी गतिविधियां

शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रभारी की अनुपस्थिति में प्रो. रामानन्द के कुशल दिशा निर्देशन में छात्र एवं छात्राओं ने खेल सम्बन्धी गतिविधियों में अपनी परम्परा को निरन्तर बढ़ाते हुए प्रशंसनीय उपस्थिति दर्ज कराई है। महाविद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न अन्तर-महाविद्यालय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिसका विवरण इस प्रकार है: 8 सितम्बर 2022 को राजकीय महाविद्यालय हरिपुर मनाली में आयोजित क्रॉस कन्ट्री दौड़ में महाविद्यालय के चार छात्रों तथा दो छात्राओं ने भाग लिया।



– 22 से 26 सितम्बर तक राजकीय

महाविद्यालय कुल्लू में आयोजित बास्केट बाल प्रतियोगिता में बंजार महाविद्यालय की भगीदारी रही।

– एम.एल.एस.एम. महाविद्यालय सुन्दरनगर में 20 अक्टूबर को आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट (छात्र) में महाविद्यालय ने अपनी भागीदारी दर्ज की।

– 28 से 31 अक्टूबर तक महाविद्यालय सीमा रोहडू में आयोजित कबड्डी (छात्र) महाविद्यालय के 12 छात्रों में भाग लिया।

– महाविद्यालय उना में 17 से 19 नवम्बर तक आयोजित बैडमिंटन प्रतियोगिता में महाविद्यालय के 5 छात्रों ने भाग लिया।

– सेंट बीड्स महाविद्यालय में नवम्बर में आयोजित बास्केट बाल (छात्रा) में महाविद्यालय की 10 छात्राओं ने भाग लिया।

– 23-24 दिसम्बर 2022 को एम.एल.एस.एम. महाविद्यालय सुन्दरनगर में आयोजित वुशु खेल में महाविद्यालय के 4 छात्रों ने भाग लिया जिसमें से मीनेश बी.ए. प्रथम वर्ष ने कांस्य पदक तथा योगेन्द्र बी.ए. प्रथम वर्ष ने रजत पदक हासिल कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

– 16 फरवरी 2023 को राजकीय महाविद्यालय बंजार में 20वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

मध्यावधि परीक्षाएं

विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाने तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए हि. प्र. विश्वविद्यालय ने आंतरिक मूल्यांकन अंक पद्धति का तरीका अपनाया है। इस महाविद्यालय में परीक्षा नियंत्रक डॉ. योगराज के कुशल नेतृत्व में प्रत्येक विषय में परीक्षा ली जाती है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त अंक, उपस्थिति तथा कक्षा परीक्षा में प्राप्त अंको के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन किया जाता है।



हिन्दी दिवस



14 सितम्बर 2022 को हिन्दी विभाग के प्रभारी की अनुपस्थिति में राजनीति शास्त्र विभाग द्वारा हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसके तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे निबन्ध लेखन, काव्य पाठ, सुलेख एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस अवसर पर डॉ. दुनी चन्द, डॉ. श्रवण कुमार तथा प्रो. लीना वैद्या ने अपनी मौलिक कविताओं का पाठ किया।

संविधान दिवस



महाविद्यालय के राजनीति शास्त्र व लोक प्रशासन विभाग द्वारा संयुक्त रूप से संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर 26 नवम्बर 2022 को प्राचार्य की उपस्थिति में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कविता पाठ, भाषण, निबंध लेखन, पोस्टर मेकिंग, चित्रकला तथा नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय पुरातत्व दिवस



15 अक्टूबर 2022 को इतिहास विभाग द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय पुरातत्व दिवस मनाया गया। इस समारोह में इतिहास विभाग के विद्यार्थियों ने पी.पी.टी. के माध्यम से विभिन्न ऐतिहासिक विषयों

पर जानकारी दी। इसके साथ ही एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

साहित्य परिषद्

7 सितम्बर 2022 को महाविद्यालय के प्राचार्य की अध्यक्षता में 'साहित्य परिषद्' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भाषण, कविता पाठ, निबन्ध लेखन, पोस्टर मेकिंग, प्रश्नोत्तरी, रंगोली तथा मूर्ति कला जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों में लगभग 60 छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज करवाई।



सिराजोत्सव : सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियां

शिक्षा के साथ-साथ छात्रों की प्रतिभा प्रदर्शन के लिए मंच प्रदान करना महाविद्यालय प्रशासन का लक्ष्य रहता है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए महाविद्यालय में दिनांक 28 मार्च 2023 को केन्द्रीय छात्र संघ के द्वारा एक दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जोगिन्द्र सिंह ठाकुर ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस कार्यक्रम में डॉ. विकास कुमार के कुशल मार्गदर्शन में लोक गीत, हिन्दी गीत, शास्त्रीय गीत, लोक नृत्य, एकल नृत्य एवं नाटी इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा प्रतिभाशाली विजेताओं को प्राचार्य द्वारा पुरस्कृत किया गया।





स्वच्छता अभियान

“स्वच्छ भारत अभियान” के उद्देश्य को साकार करने एवं विद्यार्थियों को पर्यावरण एवं कार्य स्थल की स्वच्छता के महत्त्व को साकार करने के लिए महाविद्यालय परिसर एवं भवन में नियमित रूप से एन.सी.सी., एन.एस.एस. रोवर्स एंड रैंजर्स एवम् अन्य विद्यार्थियों द्वारा प्राध्यापकों की देख रेख में क्रमावर्तन (Rotation) में सफाई की जाती है।



सामाजिक कार्य



महाविद्यालय की ओर से बंजार अग्नि पीड़ितों को सहायता राशि अनुदान के रूप में देते हुए प्राचार्य महोदय व अन्य आचार्य गण।



सेवानिवृत्ति भोज

PRIDE OF OUR COLLEGE



कुलदीप सिंह
(1st in B.Sc.3rd year)



जानवी शर्मा
(2nd in B.Sc.3rd year)



निशान्त ठाकुर
(3rd in B.Sc.3rd year)



उज्जवल रॉयल
(1st in B.A. III)



दिपिका कुमारी
(2nd in B.A.III)



नीता देवी
(2nd in B.A.III)



गायत्री
(3rd in B.A. III)



दिवंकल ठाकुर
(1st in B.Com. III)



दीपा देवी
(2nd in B.Com. III)



नेहा ठाकुर
(3rd in B.Com. III)

The Award Winners



...and the tradition continues



Editorial Board (Students)



From the editors of English, Science & Commerce Sections

Time plays a significant role in human life, which is a beautiful gift from God to each of us who are alive. Life arises from the earth and again returns to it in the end, so we should make the most of this gift. While we grow up in a protected and sheltered environment in school without any worries and uncertainties, college life brings unexplored pathways and experiences of all kinds along with opportunities to showcase our talents or make meaningful connections for life.

Siraj Shikha provides one such platform for the students of GC Banjar to express what we feel and bring forth our hidden voices. We would like to thank our dear teachers for giving us the chance to serve as student editors for the 2023 edition of the college magazine. Also, a special mention for our friends Meena, Ganga and Kanika for all their help as part of the editorial team.

Tamanna (B.A. III year)
Ishita Thakur (B.Sc. III year)
Anita Sharma (B.Com. III year)

संस्कृत अनुभाग

सम्पादकीयम्

अहं गौरवमनुभवामि यत् संस्कृत विभागस्य छात्रा सम्पादिका अस्मि। संस्कृत देवभाषा गिरवाण वाणी नाम्ना प्रसिद्धा। संस्कृत देव भाषा विश्वस्य प्राचीनतमा सर्वोत्तमा च। वेदाः विश्वस्य ज्ञान-विज्ञान कोशः अस्मिन् भाषायां लिखिताः आसन्। मम हार्दः इच्छा सर्वे पठतु संस्कृतं वदतु संस्कृतम्।

सुनीता देवी, बीए द्वितीय वर्ष

पहाड़ी अनुभाग

संपादकै री कलमा संगे

चौउ फेरा का सरगा बे छुणे आले. पहाड़ रे मंजे तिर्थना रे किनारे सा म्हारा शोभला बंजार कॉलेज। हर भाषा रा आपणी जगह खास महत्त्व हुँदा। 'कुल्लवी' म्हारी पहाड़ी बोली सा। म्हारी पलदी री फगली, गुशालै री होली, माघै रा साजा, बंजार मेला, चेहणी कोठी बड़े प्रसिद्ध सा। हामे आपणे हिमाचला का केथरे भी दूर नाहे तेवा भी पहाड़ी संस्कृति हमारें दिले रहन्दा। सभी भाई-बहन जासु आपणे विचार पहाड़ी भाषा न लिखे तिहा बे मेरी शुभकामनाएं ता दुई हाथा जोड़ी प्रणाम।

बन्दना (छात्र सम्पादक)
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

हिंदी अनुभाग

सहज व स्वतन्त्र लेखन अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। इस माध्यम का प्रयोग मनुष्य सदियों से अपनी व्यक्तिगत बौद्धिकता तथा सामाजिक चेतना को संवारने के लिये करता रहा है। लेखन विधा अपने-आप में बहुआयामी पृष्ठभूमि संजोये हुये है। शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा युवा लेखकों को लेखन तथा सम्पादन की सूक्ष्म शैली से अवगत से करवाना इस विधा के संवर्धन की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल है।

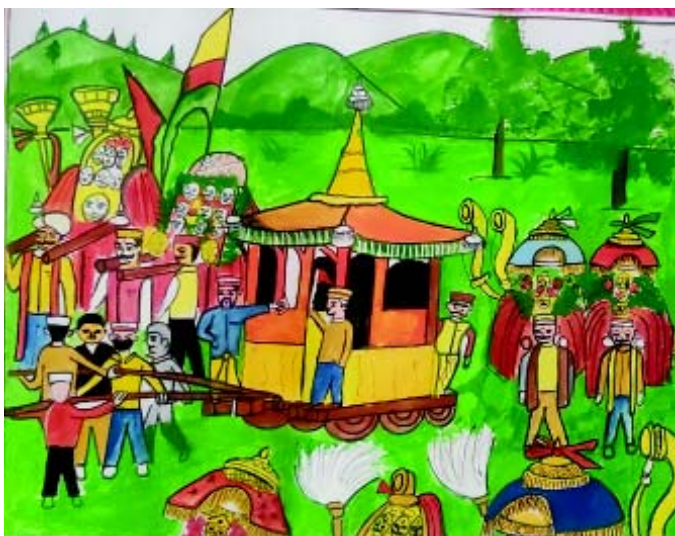
मैं, हिंदी संवर्ग की छात्रा सम्पादिका के रूप में पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ कि यह पत्रिका विद्यार्थियों के मौलिक चिन्तन तथा हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन शैली को शब्दों के रूप में उकेरने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

मैं सभी को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करते हुये अन्त में महाकवि तुलसीदास जी की पंक्तियों को उद्धृत करना चाहूँगी-

“कवित विवेक एक नहीं मोरे,
सत्य कहूँ लिखी कागद कोरे।
कवि न हों, नहीं वचन प्रवीनो,
सकल कला सब विद्या हीनो।”

इति शुभम!

—दीपांशी कृष्णा, बी.ए. द्वितीय वर्ष



Lokesh, B.A.-III Year

विविध :

कविताएं, कहानियाँ, लोक-
कथाएँ, आलेख

“गुम है जिन्दगी कहीं”

क्यों, जिन्दगी में हैं ये रंजिशें?
मन महसूस करता हजारों बंदिशें।
अजीब हूँ मैं और मेरी जिन्दगी भी,
जीती रोज हूँ पर जीती नहीं,
गुम सी है जिन्दगी कहीं,
पर अब उसको पाना है,
जिन्दगी में नया उत्साह लाना है।
ऐ जिन्दगी! क्यों तू उलझ गई,
इन छोटे-छोटे तूफानों में?
तूझे तो रहना था जिंदा,
हर परेशानी के पैगानों में।
मेरी जिन्दगी! तू फिर लौट आ।
क्यों मेरे पास होकर भी तू पास नहीं?
ऐ मेरी खोई खुशियों! ये तो कोई बात नहीं।
पर अब हंसकर तूझे जीना है,
हर दुःख का घूंट हिम्मत से पीना है।
गुम है जिन्दगी कहीं,
पर अब उसे पाना है।
हर मुश्किल को हराना है।

—लैन्सी शर्मा, बीए प्रथम वर्ष

कॉमर्स बड़ी है मस्त—मस्त

कॉमर्स बड़ी है मस्त—मस्त
बिजनेस का है यह दोष—दोष
अकाउंटिंग उड़ा दे होश—होश
इनकम टैक्स की बात है और
रिलेक्स रखे हर वक्त—वक्त
कॉमर्स है बड़ी मस्त—मस्त
जर्नल एंट्रीज़ है डोर—डोर
बिजनेस में है लॉ एक्ट फोर (4)
बिजनेस स्टैट के हैं अजब मोड़
फॉर्मूला है जिसका सख्त—सख्त
कॉमर्स है बड़ी मस्त—मस्त
अकाउंटिंग मैम रखे नोट
हमें सिखाए ऑडिट रिपोर्ट
इण्डिन इकॉनिमी रखे मद मस्त—मस्त
कॉमर्स बड़ी है मस्त—मस्त

रोहित कुमार, बीकॉम, दूसरा वर्ष

बचपन

गलत होने पर भी गलती न अपनाना
छोटी—सी बातों पर यूँ ऐसे रूठ जाना
न कोई चिंता और न कोई फसाना
डांट—फटकार सब सुन
फिर वही मैदान में पहुंच जाना
पूरे गांव की सैर, बिन चप्पल ही कर आना
कभी यहां तो कभी वहां
कहां था कोई ठिकाना
घर तो जैसे मजबूरी में पड़ता था जाना
क्या करूं, मैं हूँ उस बचपन का दीवाना
अब तो ऐसे लगता है कि
था वह कोई स्वप्न पुराना

— भानू प्रिया, बीए प्रथम वर्ष

मंजिल आती ही होगी

कुछ कदम बाकी है अभी
क्यों रुके हो इस राह पर
जहां तुम्हारी मंजिल है ही नहीं
क्यों बैठे हो इस मोड़ पर
जिस मोड़ पर तुम्हें थकना ही नहीं
तुम्हें बढ़ना है उसे प्राप्त करना है
उठो! खोलो किवाड़
मंजिल खटखटा रही है तुम्हारा द्वार
मंजिल आती ही होगी, कुछ कदम बाकी है।
उठो...

— भानू प्रिया, बीए प्रथम वर्ष

मां

न जाने ये आदत बन गई
फिर चाहे हो खुशी या गम
बस मन कहता है कि मां
पास रहो मेरे हमेशा तुम
तुम सिर्फ मां ही नहीं
मेरा सब—कुछ हो तुम
तुमसे ही शुरू तुम पर ही खत्म

वैसे तो हैं मेरे पास शब्द अनेक
पर नहीं कर सकती शब्दों में बयां
कि मेरे लिए तुम क्या हो मां!

— भानू प्रिया, बीए प्रथम वर्ष

निकलेगी कभी बात

निकलेगी बात कभी तो
एनएसएस कैम्प के दिन खास रहेंगे।
बिताया कैम्प में हर लम्हा
बातों में बात रहेंगे।
सुबह का योगा, वीरेन्द्र भैया और कन्नू का गीत,
प्रभात फेरी के भजन, दिन में गुरुओं के भाषण
सभी मीठे एहसास साथ रहेंगे।
कभी तो निकलेगी बात
घुल आएगा मुंह में फिर से वही
प्रिया, शबनम और वंशिका के बनाए
गोभी के परांटों का स्वाद।
बात निकलेगी तो
घिर आएंगी कैम्प की सुहानी यादें।
वो साथियों संग साफ करना कूड़ा-कचरा और
काटना झाड़ियों के कांटे।
और
जोगिन्दर सर, श्रवण सर की प्रेरणा व प्यार भरी बातें।
निकलेगी कभी बात तो...



— नेनिता राही, बीएससी, तृतीय वर्ष

For Dreamers Everywhere

Once again, I find myself looking up at the night sky
At the moon, the stars and all the things that shine
Not quite knowing why I'm doing so
I didn't even realize when I escaped my room and
was floating around the night sky
For countless times, my mind drifts off chasing
the light on a starry night
At ease, finding peace
When anyone asks, I simply put on my usual mask
and say, nothing is wrong
But the stars know all along that I find solace
among them
So careless and free, I wonder why

Gunjan Thakur, B.A. III year

Corona Journal Entries

1. Corona A/c Dr. To China A/c
Being Corona enters China
2. Cold, Cough, Fever A/c Dr. To Corona A/c
Being effects of Corona in the human body
3. World A/c Dr. To Corona A/C
Being Corona spread across the whole world
4. Loss of life A/c Dr. To Corona A/C
Being people died due to Corona.

- Sujata Thakur, B.Com, 3rd year

ये दुनिया भी कॉमर्स ही है

टैक्स में बहुत गम है।
लॉ भी कर रही आंखे नम है।
एकाउंट्स में हम थोड़े जो सुलझे हैं।
पर अन्य सवालों में हम बेहद उलझे हैं।
पर न जाने ये क्या हो रहा है?
सब देख कर मेरा दिल रो रहा है।

जागृति, बीकॉम, प्रथम वर्ष

तुम्हें ही था आना

हे राम! धन्य हो तुम
 धन्य है तुम्हारा कुल्लूत धाम।
 न होती अगर तुम्हें,
 देवभूमि में बसने की आस।
 क्या? उठा पाता, मूर्तियां तुम्हारी,
 अयोध्या के त्रेता मंदिर से दामोदर दास।।
 हे राम अब तुम ही समझाओ न
 जगत प्रकाश कैसे कर सकता था
 ब्राह्मण हत्या का पाप
 जिसके पूर्वजों को स्वयं,
 मां हिडिम्बा ने दिलवाया था राजपाठ।।
 हे राम सही बतलाना
 ये विधि का था विधान, या फिर,
 तुम्हें देवभूमि था आना
 उठता! मन में प्रश्न
 जिस धरती दुर्गा और शिव की होती पूजा—अर्चना।
 तिस पर राजा न करता अब,
 रघुनाथ को भोग लगाए बिन भोजन।।
 इक तरफ राजा जगत
 ब्राह्मण हत्या से मुक्त हुआ।
 दूसरा सारा कुल्लूत, तुम्हारा भक्त हुआ।।
 खूब तुमने खेल है खेला,
 जिसे हम नादान, समझ रहे हैं मेला।
 और कुछ नहीं,
 और कुछ नहीं,
 सदियों पुरानी यह गाथा है।
 दशहरा नाम से अब कुल्लू
 इसे बड़ी धूमधान से मनाता है।।
 सच बताना, तुम्हें ही था न यहां आना?
 बस! सच बताना।



श्री रघुनाथ जी

— नेनिता राही, बीएससी, तृतीय वर्ष

In the Lap of Nature

Traveling by the regular bus
 One day I met a girl
 Who was not from here
 And though I felt some fear
 I asked her, you are from where?
 I am an outsider, she replied
 But now an insider
 For wandering for seven years
 Through the beauty of these mountains
 Makes me want to live my whole life here

Bhanu Priya, B.A. I year



कॉमर्स शायरी

“जिस प्रकार अकाउंट में बेलेंसशीट को बेलेंस करने के लिए असेट्स और लाइविलिटी की जरूरत पड़ती है, ठीक उसी प्रकार लाइफ को बेलेंस करने के लिए भी सुख—दुःख, कठिनाइयों, परिश्रम इत्यादि की जरूरत पड़ती है।”

— टिवंकल ठाकुर, बी.कॉम तृतीय वर्ष

सुभाषितानि

1. निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् । अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥
 2. श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा । मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा ॥
 - 3 सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः । सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥
 4. नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः । नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम् ॥
 5. आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् । धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥
- ऐश्वर्या, बीए प्रथम वर्ष

लक्ष्यं हि जीवनम्

लक्ष्यं बिना जीवनं तु असम्भवम्
लक्ष्येन एव लोके जीवनस्य महत्वम्
लक्ष्यं बिना जीवनं सदैव दिशाहीनम्
लक्ष्यं एव अस्माकं जीवनस्य आधारम्
लक्ष्याय ये कार्याणि कुर्वन्ति नित्यम्
तेषां एव कार्याणि सिध्यन्ति इति सत्यम्,
लक्ष्येन मनुष्याः कुर्वन्ति (नित भविष्यनिर्माणम्)
ये ते इच्छन्ति, परिश्रमस्य प्रमाणम्
गान्धिमहोदस्य लक्ष्यं भारतस्य स्वतन्त्रता ।
दृढ निश्चयेन यत्नेन सः तेन प्राप्तम्
कल्पना चावलायाः लक्ष्यम्
(एस्ट्रानॉट) भवितुम् ।
सफलीभूता सा एतत्
निजजीवनम् पूरयितुम् ।

— अनिता शर्मा, वाणिज्य संकाय, तृतीय वर्ष



विद्याधनं सर्वं धनं प्रधानम्

विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम् इति सर्वैः स्वीक्रियते, यतोहि विद्यया एव सर्वे जनाः सर्वाणि कार्याणि साधयितुं समर्थाः भवन्ति । विद्यां प्राप्य उन्नतिं, कीर्तिं, सुखसमृद्धिं च लभन्ते विद्वांसः । यदुक्तं केनचित् —
मातेव रक्षति पितेव हिते नियुक्ते
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीयखेदम् ।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥
विद्याधनं व्यय कृते वर्धते, संचायत् च क्षयम् आप्नोति, एतस्माद् इदं अपूर्वम् एव धनं । अतः एवोक्तम् —
अपूर्वः कोऽपि कोषोऽयं विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात् ॥
नृपाः, राष्ट्र-पतयः, मुख्यमंत्रिणः, प्रधानमंत्रिणो अपि विविधविषयविशेषज्ञानां, कवीनां, वैज्ञानिकानां मतिमतां विदुषां समादरं कुर्वाणाः तेषां उत्साहवर्धनं कुर्वन्ति पुरस्कारैः । अतः अस्माभिरपि विद्या पूर्णमनोयोगेन पठनीया, ग्रहणीया विद्याविहीना पशु इति निर्विवादेन सिध्यति ।
विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ॥
विद्या मनुष्यस्य सर्वश्रेष्ठ आभूषणं अस्ति—
“विद्ययाऽमृतमश्नुते सा विद्या या विमुक्तये”

— सुनीता देवी, बीए द्वितीय वर्ष

समयस्य महिमा

समयः एक दर्पणमस्ति
यस्मिन् एतां आक्षता च मुखं दृश्यते ।
समयः एकः नदीः अस्ति ।
प्रवाहे अस्माकं जीवन बहति ।
समयः तस्य शत्रुः अस्ति ।
य एतस्य मूल्यं न जानाति ।
समयः तस्य कष्टकेन युक्तः मार्गमस्ति ।
यः ऐतेन सार्धं न चलति ।
समयः अस्माकं पथप्रदर्शकः अस्ति ।
यः अस्मान् अग्रेगन्तु शिक्षति ।

— प्रिया देवी, बीए द्वितीय वर्ष

प्रकृति

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्
बहूनामस्ति वृक्षाणाम्
पुष्पाणां चापि मानेयम् ।
भ्रमराणां, पशुनां
पक्षिणां च मातारस्ति ।
जनेश्च जीवनं सदा
ददाति प्रकृतिः माता ।
अस्ति सा तु मनोहारी
मातृणामपि मातारस्ति
प्रकृतिः माता सर्वेषाम्
नमोऽस्तु ते मात्रे प्रकृत्यै ॥

—नेहा देवी, बीए द्वितीय वर्ष

नीतिश्लोकाः

1. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥
अर्थात् : जिस प्रकार सोते हुए सिंह के मुँह में मृग स्वयं नहीं प्रवेश करता, उसी प्रकार केवल इच्छा करने से सफलता प्राप्त नहीं होती, अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है ।
2. भूमेः गरीयसी माता, स्वर्गात् उच्चतरः पिता ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥
अर्थात् : भूमि से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊँचे पिता हैं । माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं ।
3. अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ।
अर्थात् : आलसी को विद्या कहाँ, अनपढ़/मूर्ख को धन कहाँ, निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ ।
4. परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्,
वर्जयेतेतादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखः ।
अर्थात् : पीठ पीछे काम बिगाड़ने वाले और मुख पर मीठी-मीठी बातें करने वाले मित्र को, मुख पर दूध वाले विष के घड़े के समान छोड़ देना चाहिए ।
5. दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत् ।
उष्णो दहति चांगारः शीतः कृष्णायते करम् ॥
अर्थात् : दुर्जन, से प्रीति (मित्रता) और शत्रुता कभी नहीं करनी चाहिए क्योंकि ये उस कोयले के समान है जो यदि गर्म हो तो जला देता है और शीतल होने पर शरीर को काला कर देता है ।

— नवीन ठाकुर, बीए तृतीय वर्ष

बापू

म्हारे दिला री समझा ज बिना बोले,
म्हारी तणी आपणे सुपने जासु छोड़े ।
बापू हुँदा सभी रे प्यारे,
घरे री नीभ, दुनिया का न्यारे ।
मानु माँ दिँदा जन्म हमा,
पर जीऊने रा तरीका खोज्दा तमे हमा ।
हामे आदे तेरे चेलु कोल्हा रे,
तमे म्हरी जिउणी जणात दिला रे ।
ठोकरा लागी जेभरे-जेभरे,
थारा साथ भेटा हमा तेभरे-तेभरे ।
हामे भलदा सुपना राची,
तमे केरदा म्हारा सुपना पूरा, पूरी राच-दिहाड़ जागी ।
तमा घाटी सुना संसार म्हारा,
जेभरे भी आस छुटी, तेभरे भेटा थारा सहारा ।
तमा घाटी आहदी म्हारी हर खुशी अधूरी,
थारे बिना नी हुंदी म्हारी दुनिया पूरी ।
म्हारे दिला रा सभी का प्यारा,
सभी का न्यारा, बापू हमारा ।

— ओमरीता सेठ, बीएससी, तृतीय वर्ष ।

मेरी जीभी

शाइली बाकरी शोभले दांद,
चाला तेबा जीभी मैदान ।
जीभी रे टसू बड़े शैतान,
बाहनी डंडे पेचणे कान ।
शोभली गला शोभले ज्ञान,
ऊँची रखणी जीभी री शान ।
शेषनाग सा सभी री जान,
देऊ जीभी सा सभी का महान ।
अखे इंदा बड़े बड़े मेहमान,
मीठी रखणी अपनी जवान ।
गुरुजना रा केरणा सदा सम्मान,
ममी पापा रा भी डांहदा मान ।
बनना हामा शोभले इंसान,
ऊँचा केरना हामा जीभी रा नाम ॥

— हिमानी वर्मा, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

झालरा—मालरा

(कंवर टेडी सिंह जी रा विनोदी स्वभाव)

एकी माहणू आणी बेटडी न, पर तेसा नी थी तेउ वे रहणा। तेसे बेटडी लाई मां मृदडी लोडी, वौंद लोडी, मा कनबीचे लोडी। तेऊकी स लागो आणदो पठी सारी चीजा, यह सोची करी कि यह लोडी थी सीधी मा बे रही।

तेउकी तेसे बेटडी बोलू ऐवा लोडी मा तिया झारला—मालरा। तेऊ बोलू तिया झालर मालरा नाई पुगणी आंदी। तू नांह होरी वे कहीं होरथ। ताएँ डुबेरु पठी हाउ। ऐबा या सारी चीजा होई मेरे बसा का बागे। पठी टाइम वेस्ट करू ताएँ मेरा। तेऊकी सह बसी होरथ। तिउ भी आणि होर लाडी।

काफी अरसे बाद, ग्रां री एकी जाचा में होई तिया कठे। स बेठी दी थी खला री चाउडी। व्याले लागी दी थी नाटी सह भी थी तेसा नाटी भाली बेठी दी सह होई दी थी बखे दुबली पतली, झिकडे माडे, तेथ 'तुमडे री' झालरा—मालरा। स मर्द लागो द थी नाचदो, तिऊ भी ठोकु लामण बोली....

'नोखी चिडी ऐ किंहा जातरा आई,
होरी गला दे डिगणे, तिया झालरा—मालरा किवे नी लाई।'

..जेथकी ताए अडी पाई दी थी, तेरे त बुरे हाल होई, तेरी स्थिति ठीक नी आहदी, पटु ठीक नी आह, सुआटर ठीक नी थी, दुबली—पतली होई दी थी, स आई दी पठी झूडी होई। तेऊकी तेसे भी दिना चाऊदी का बदल (जवाब)

'भले माणूआ तेरे लागे शरापा,
झालरा—मालरा दे डिगणे पेटा वे नी पडी फिमडा ताता।।'
— बंदना, कला स्नातक, तृतीय वर्ष (Source : Facebook)

पहाड़ा रा जीणा

तुसा रा शहर आसा छडी के आईगए,
आज भी आसा जो गाओ री बड़ी याद आंदी।
पहले पहाड़ा बिच बड़ी ठंड होन्दी थी,
आज ऐथि भी चटकरदी धूप पाँदी।
पहले पहाड़ा बिच घने जंगल होन्दे थी,
आज पेड़ काटी के लोके बंजार केरी जमीना।
पहले बरफा री चादर आंगन बिच आउदी थी,
आज पोष भी लगदा जेड़ा जेठा रा महिना।।
पैदल आम्माए सोगी, नानी रे घर जांदे थी,

आज गाड़ी मोटर री होई गई भरमार।
आणा—जाणा रिश्तेदारियाँ बिच कम होई गया।।
ऊना रे कोटा रा बड़ा रवाज,
आज बाजार बिच फैशनी कपड़े री लगी भरमार।।
पुराणी फसल, पुराणी गला, पुराणे माहणु,
खरा था पुराणा रवाज,
आज कोई एथा जो ऐन्दा ता कोई उथा जो जांदा,
अपनी डफली कने अपना राग।

नितांशु ठाकुर, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

बंजार

सभी का शोभला सभी का प्यारा,
यह सा भाईयो बंजार हमारा।
अठारह करडू री सा यह माटी,
देऊ देवी रे रथडू संगे सजा बड़ी बांकी।
इना सभी रा लोडी सदा रहु सहारा,
यह सा भाईयो बंजार हमारा।
स्कूल, कॉलेज का पढ़ी करे बड़े बड़े अफसर सा बणदे,
बंजारा रा नाम सा रोशन केरदे।
एकी दूजे रा हाथ डकी, बणदे सभी रा सहारा,
यह सा भाईयो बंजार हमारा।
ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क बंजारा री शोभा बढ़ाए,
दुरा—दुरा का लोका भालदे हेरदे सी आए।
जीभी, तिर्थन, सैंज, जलोडी रा नजारा,
यह सा भाईयो बंजार हमारा।
बंजार मेले री गल निराली,
सभी देऊ देवी संघा—संघा जेबे चली।
शोभले माहणू, शोभली इने री विचारधारा,
यह सा भाईयो बंजार हमारा।
सभी का शोभला सभी का प्यारा,
यह सा भाईयो बंजार हमारा।।

— वीरेंद्र कुमार, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

होछी जेही जिन्दगी

मेरी दुनिया
मेरी सारी जिन्दगी आसा मेरे माता पिता जी।

मेरी होछी जेड़ी जिन्दगी मेरे दुखा सुखा संगे भरीदी ।
मेरी जिंदगी पता नी किवे ऐई, ठींगा बोलदा जेही तेरी
जिन्दगी आसा
तेही लोडि हामा भी, पर सह लागा माही थोग ।
मेरी जिन्दगी केही ॥

मेरे गुरुजी
मेरे गुरुजी मेरे ईश्वर आसा । जेबरे जेबरे मा का गलती होई
तेबरे-तेबरे याहे मा बे सही रास्ता रीहाउ । मेरे गुरुजी मा बे
जन्म नाई दिनुदा, तेवा के होउ, ऐसा दुनिया में केड़े हांडना,
यह मा मेरे गुरुजी सिखाउ ॥

मेरी शिक्षा
मेरी शिक्षा मेरी सभी का बड़ी ताकत । शिक्षा बिना मेरी
जिंदगी नाई आहन्दी । शिक्षा मेरी सबसे बड़ी शिड़ी आसा,
जिन्दगी में हाडणे री ॥

मेरा लोभी
मेरा लोभी एक फूला री डाली जेहा, तेइ रा गुस्सा जेहा
खिलदा फूल । जेबा रामड़ा पानी दीना तेवा खिला, जेबा
गुस्सा करू तेवा मुरझा । ऐड़ा ऐड़ा सा मेरा लोभी ।

– गंगा देवी, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

देवभूमि प्लाइच

सभी ना शोभला सभी ना प्यारा,
पूरे सराज न मेरा प्लाइच ग्रॉ प्यारा ।
अखले लोका भोले भाले,
सभे आसा देऊ ईशारा रे प्यारे ।
भद्र जाच देऊ ईशारा री शान,
ऐते करी आसा प्लाइचा री पहचान ।
लोका अखले बड़े प्यारे,
मिली जुली रंहदा सारे ।
मेरे प्लाइचा रा बांका नजारा,
हेरा अखा का बंजार सारा ।
प्लाइचा रा शोभला उपजारू माटा,
आछा तेवा लोको बाय-बाय टाटा ॥

– टीना देवी, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

आसा री बोली 'पहाड़ा री पुकार'

एड़ी क्या गुस्ताखी, क्या कित्ती मै बुराई,
पढ़दे लीखदे ता थे नी, बोलने गलाणे ते भी दिति गबाई ।
एड़ी केड़ी खता हुई मेरे ते ओ, जे मेरे आपणेयां ही कित्ती हांड
पराई ।
कदे हिन्दी बोली, कदे पंजाबी, फेरी अंग्रेजी री कित्ती बड़ाई ।
ज्यादा पढ़ा लिखा लगने खातर, मेरे ते मुह दित्या फिराई ।
बोली भाषा च तबदिली ता हुंदी आई,
पर आसे आपणी बोली रा अस्तित्व दित्या मुकाई ।
बच्चेया जो माँ बापुए हिन्दी ता अंग्रेजी ही सिखाई,
ऐ ता पिछड़ी पुराणी हा, ऐ सोच केथि ते आई ।
भाई ऐडा भी क्या हुआ, ऐ धयाड़ा भी दित्या दिखाई,
पहाड़ा री संस्कृति री पहचान दिति मुकाई ।
केसी भाषा री मिंजो बैर नी, हर भाषा छैल हुई ।
पर आपणी जो होरी ते छोटा समझना, ऐ केथी री रीत हुई ।
पहाड़ी ग्लांदा गबार, ते अंग्रेजी री गाली मुह री शोभा बड़ाई,
हाउ तुसा री पहाड़ी, जो सारेया दिति भुलाई ।
हर भाषा-बोली सिखा पढ़ा ते बोला, पर आपणी मत देंदे
गबाई ।
हर बोली री आपणी अहमियत हुंदी, मेरे बगेर तुसा रा भी क्या
बजूद रेहणा ओ भाई ॥

– वीना देवी, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष



भ्रष्टाचार

सभी लोके री एके पुकार, भ्रष्टाचार रा केरा संहार ,
 ऐई भ्रष्टाचारे लाई मचाऊँ हाहाकार ।
 गरीब अमीर एके समान,
 तेवा हुणा देश महान ।
 भ्रष्टाचार चलाऊ ऐआ नेते,
 चिकी-2 करा एआ उल्टे फेरे,
 ऐहा नेते रे उल्टे विचार ,
 तेवा लागा बड़दा भ्रष्टाचार ।
 नेते रा भी केह कसूर,
 तेवा आम आदमी लाई करने तैया मजबूर ।
 आम आदमी लाउ बढाऊना भ्रष्टाचार,
 ऐहा लोका का बनी आधी सरकार ।
 देशा रे माणुओ तमेभी हा देशा री आन,
 भ्रष्टाचार रा नी करे ऐतरा मान ।
 पुलिस भी बनी एवा भ्रष्टाचारी ,
 तेउकी के सुधारणी एआ देशा री खरी ।
 75 साल बीते देशा री आजादी,
 आज भी लागी हुंदी देशा री बर्बादी ।
 थोड़ी सी डाहा आजादी री कुछ लाज,
 न लाए देशा वे ऐतरा दाग ।।

— ज्योति शर्मा, कला स्नातक, तृतीय बर्ष

पहाड़ी बाणा

फेर फिरदी उछटी हिउंए री धारा,
 उन्धे बंहदी झर झर पाणी रा नाला ।
 उछटी धारठी पेंदे देऊ देवी रा मन्दिर म्हारा,
 ए सा सभी ना प्यारा हिमाचल म्हारा ।
 टोपी कलगी पाटू-धातु सा बाणा म्हारा,
 वाजा गुजा, नाटी-पार्टी सा जीवन म्हारा ।
 सच्चे माहणू सच्ची गला, देऊ देवी रे प्यारे,
 हामे सा हिमाचली सभी का न्यारे ।
 अंगी-अंगी सभी री बोली
 अंगी-अंगी सभी रा बाणा ,
 कई निउले ता कई सराजी
 फेरी भी एक 'पहाड़ी' सा नाउ हमारा ।।

— कल्पना कुमारी, कला स्नातक, द्वितीय बर्ष

बुढ़ापा

कोई लागी एवा तेसा हासी में खुशी हेरदी
 बस की खुश आसा एडा लागी स सोभी वै रेहुंदी
 लाउ एक फुटू लउणा तेवा स लागी शर्माऊंदी
 बखे कमजोर लागी स हेरदी
 झुरी संगी भरु द स मुखडु ।
 शुके दे फुला साही लागी दी सह हेरदी
 एता बीचे लागी स बोलदी
 कि जौनी में थी हाउ भी तम्ही सेही हेरनी बांकी
 एवा शुकी मेरे शरीरा री टांकी
 स लागी बोलदी केडी शोभली थी सह
 बचपन होर जवानी
 कोई थी सह चिंता, सभी जगह थी सह नादानी
 एवा ता जिउणे री इच्छा ही नी करदी
 सोचदा कि वक्ता का पहिले मरदी ठीक
 ऐसा गला शुणी ता दुःख बहु होऊ
 पर तेवरे हाउ कुछ बोली ना पाई
 बस दुऐ एक दुजै भाली होई
 ऐसा बारी सह बोलदी गई
 और हाऊ सीधी शुणदी गई ।

— भानु प्रिया, कला स्नातक, प्रथम बर्ष

बंजार

केढा शोभला बंजार कॉलेज मेरा
 ऐईरी शोभा अखै एजिया हेरा ।
 चउ पासे सा जोता रा मेल
 हेरा म्हारे बंजारा री शोभा रा खेल
 फेर फिरदे सा बूटे ता झोट
 दुःखा री तईये देउआ देवी रा खोट
 हेरा अखली शोभा हेरा अखला जीणा
 खाणे वे आसा पटूरु ता ठंडा जायरु पाणी पीणा ।
 धक्का स्टार्ट थी पहिले अखली बसा
 आसा जाणा हुँदा थी बड़ी मसा ।
 हेरा ऐवे गाड़ी मोटरा री भरमार
 पक्की सड़का होई बनिणे तैयार ।
 प्रिंसिपल सा बड़े जेंटलमैन
 म्हारे कॉलेज रा होआ सी तीना वे बड़ा ध्यान ।
 ऐतरा शुणा तुसे मेरा फयाड़ा
 मेरा घर सा (छमाहुसांरी) दतियाड़ा ।

— दीपांशी कृष्णा, कला स्नातक, द्वितीय बर्ष

The Story of Gara Durga

In ancient times, a stone *shivling* and a sculpture of Nandi bull were found in Gushaini after digging. Thus, the name Gushaini is derived from Gosain, which is another name for Lord Shiv. The villagers then built a temple and a sculpture of the mother goddess, containing forms of Mahishasurmardini and various other deities. This temple exists to the present day and the goddess is locally known as Gada Durga.

Once, the goddess appeared to a blacksmith at a place called Shalwab and told him that she desired to be worshipped in the temple of Sharchi village. The blacksmith conveyed the message to the Thakur of Sharchi. However, Lord Sheshnaag was already housed in the village temple, and so the goddess requested the deity to move to Jhutli village nearby.

Thus established at Sharchi, the goddess' worship was conducted by a priest who used to come all the way from Bandal village. Eventually, another temple for the goddess was constructed at Bandal which too stands to this day. Ever since, the mother's palanquin travels from Bandal to Gushaini each year on the day of the new moon in the month of Bhadon (August-September). On this day, the palanquin of Gada Durga is taken for a dip in the Tirthan river, followed by all the devotees who too take a bath in the holy waters.

Pallavi Thakur, B.A. I year

मुखौटों का त्योहार

हिमाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है, जहां मेलों और त्योहारों की कमी नहीं है। एक ही एक त्योहार फाल्गुन या मैखौटों का त्योहार इस साल तीर्थन घाटी में 13-15 फरवरी, 2023 तक मनाया गया। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह आदिवासियों का वसंत ऋतु पर्व है। इस दिन लोग कागज़ पर बने रावण के चित्र पर तीर चलाते हैं। घरों की सफाई की जाती है और मानसून देवता का नाम लेकर स्वागत किया जाता है। रावण के चित्र पर तीर चलाने की परम्परा के पीछे कई कहानियां हैं। अगर कोई तीर घर में

लग जाए तो इसे स्वर्ग में राक्षसों पर देवताओं की जीत मानी जाती है। सुबह-सुबह एक निश्चित परिवार के सदस्य कुछ विशेष तरह की लकड़ी लाते हैं। इसे राक्षस की एक गुफा में जलाया जाता है। गुफा की छत को ढका जाता है और जौ को आग पर भुना जाता है। यदि जौ के दाने उछलकर गुफा की छत पर जा लगे तो इसे सौभाग्य की निशानी माना जाता है।

आइए इस खूबसूरत त्योहार का हिस्सा बनें।

भास्कर ठाकुर, बीए द्वितीय वर्ष

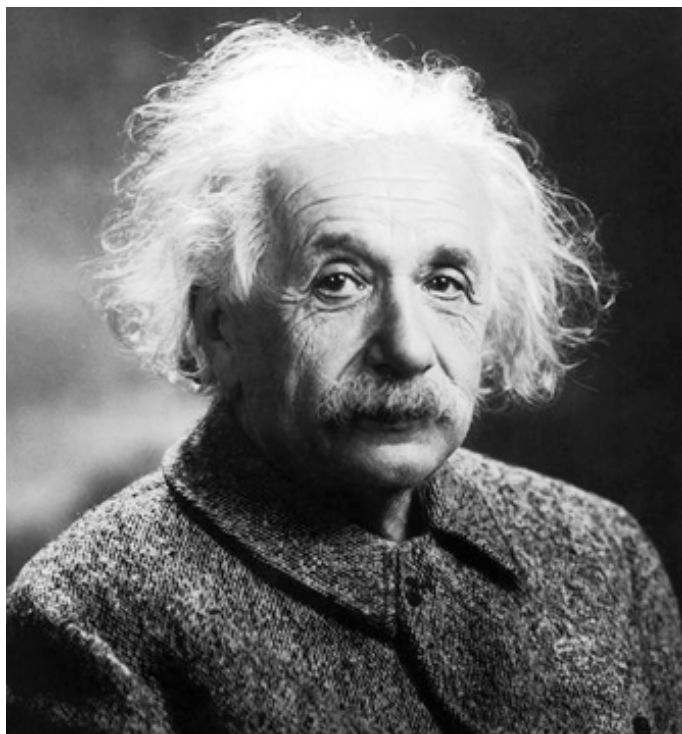


Albert Einstein

Albert Einstein (1879 - 1955) received the Nobel prize for physics in 1921, and is best known for his path-breaking theories of special relativity and general relativity. His most famous equation is $E = mc^2$, indicating that energy and mass are different forms of the same thing, and that the amount of energy in a piece of mass is the same as the amount of the mass multiplied by the speed of light squared. This is obviously a huge number and it shows that even a miniscule mass of matter contains large amounts of energy within itself.

Einstein was born at Ulm in Wurttemberg, Germany on March 14, 1879. His family was Jewish but was not very religious. When Einstein was around four, his father gave him a magnetic compass. The child became fascinated by the instrument and wanted to understand how an invisible force could make the needle move. Thus, he felt inspired to explore the world through the study of science and mathematics. Although he was considered a dull student in school, Einstein stuck to his interests and eventually became so famous that his name is now used as a trope to denote intelligence.

Kalpana, B.Sc. III Year



The Nobel Prize

Since 1901, the **Nobel Prize** has been awarded for outstanding achievements in Physics, Chemistry, Medicine Physiology, Literature and Peace. Making in 1968, the Sveriges Riksbank prize in Economic Science was established by Sveriges Riksbank in memory of Alfred Nobel.

The Nobel Prize is an international award which is administered by the Nobel Foundation in Stockholm. The foundations of the prize were laid in 1895. In this year, Alfred Nobel, who invented dynamite, wrote his last will in which he left most of his wealth to establish the Nobel Prize. Nobel was not just an inventor. He was also a scientist, author, entrepreneur and pacifist who spoke against war. The Nobel Foundation was established in 1900. It manages the assets provided by Nobel for awarding the prizes. Each prize includes a medal, a cash award and a personal diploma. The Nobel Laureates also present their Nobel lectures before a huge audience in the days preceding the award ceremony.

The Nobel prizes embody a lot of prestige. In fact they are the most prestigious awards in the designated fields. Except for the Nobel Peace Prize, all the prizes are presented in Stockholm, Sweden, at the annual Award ceremony on December 10. This day is also the anniversary of Nobel's death.

The Nobel Peace Prize and its recipients' lectures are presented in Oslo on the same day. The reason why the awards are presented in Sweden and Norway is because both countries were joined together in a personal union called the Swedish–Norwegian union when Alfred Nobel died.

Mahatma Gandhi was nominated for the Nobel Peace Prize five times between 1937 and 1948. He never received it however, and fell to an assassin's bullets on 30 January 1948, 2 days before the closing date for the 1948 Peace prize nominations.

That year the Peace prize was not awarded as perhaps he had been the likely choice. There is no Nobel Prize for Mathematics. The Nobel Prize has been awarded to families too with the Curie family winning the most (five).

-Yukta Thakur, B.Sc. III year

जीएसटी से संबंधित तथ्य

1. वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) सबसे पहले फ्रांस में लागू किया गया था।
2. भारत का जीएसटी कैंनेडियन मॉडल पर आधारित है।
3. भारत में जीएसटी विजय केलकर समिति की सिफारिश पर बनाया गया था।
4. भारत में जीएसटी 1 जुलाई, 2017 को लागू किया गया था
5. जीएसटी लागू करने वाला पहला राज्य असम था।
6. अमिताभ बच्चन को जीएसटी का ब्रांड एंबेसडर बनाया गया है।
7. जीएसटी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 279 के तहत लागू किया गया है।
8. सितंबर 2016 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा जीएसटी परिषद का गठन किया गया था।
9. वर्तमान में वित्त मंत्री अरुण जेटली जीएसटी परिषद के अध्यक्ष हैं।
10. वर्तमान में जीएसटी परिषद में 31 सदस्य हैं।
11. जीएसटी को 101वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2016 के द्वारा लागू किया गया है।
12. जीएसटी भारत की संसद में पेश किया जाने वाला 122वां संवैधानिक संशोधन विधेयक था।
13. भारत के राष्ट्रपति ने 8 सितंबर 2016 को ळैज बिल को मंजूरी दी।
14. संसद में जीएसटी बिल पास करने के दौरान, जीएसटी बिल के पक्ष में 336 वोट पड़े जबकि विरोध में 11 वोट पड़े.
15. जीएसटी नहीं चुकाने वालों को 5 साल कैद की सजा का प्रावधान है।
16. जीएसटी में करों की 5 दरें हैं यानी 0 प्रतिशत, 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 28 प्रतिशत।
17. जीएसटी एक अप्रत्यक्ष कर है और अधिक व्यापक अर्थों में इसे एक संघीय कर कहा जा सकता है।
18. जीएसटी लागू होने के बाद सेल्स टैक्स, सर्विस टैक्स, कस्टम ड्यूटी, एक्साइज ड्यूटी, वैट, ऑक्ट्रॉय टैक्स आदि नहीं रहेंगे।
19. जीएसटी को लागू करने के पीछे सबसे बड़ा कारण देश के टैक्स सिस्टम में एकरूपता लाना है.
20. जीएसटी लागू होने के बाद 'टैक्स पर टैक्स' की परंपरा खत्म हो जाएगी.

— कनिका, बी.कॉम, तृतीय वर्ष

History of Maa Jalpa and Gadagusain Fair

The original abode of Maa Jalpa was at Uttarkashi, Uttarakhand. From there, the goddess first came to Mandi via Kurukshetra in order to inaugurate the Shivratri celebrations that are now held each year as a seven-day international festival. Continuing her journey from Mandi, Maa Jalpa was enthroned at Hatkoti in Rohru, Shimla by the name of Maa Hateshwari. Thereafter, Maa Jalpa travelled to Kamrunaag and finally Gadagusain.

Here, she is known to have killed the demon Mahishasur who lived in a pond at a place called Rothalathach. After his death, the pond was drained out and filled with soil. Maa Jalpa then crossed this Gadagusain Khad, which separated the districts of Mandi and Kullu, and was finally enthroned at a spot between Kholi Khad and Suketi on the border of Mandi. In 1961, the ancient temple was demolished, giving way to a new building. Maa Jalpa then returned towards Gadagusain and established herself at a place called Jufarkot.

While the goddess was thus enthroned at Gadagusain, the armed forces of King Jagat Singh (1637-1663) of Kullu captured Fatehpur and were looking towards Jufarkot as their next challenge. The Negi Alam of Jufarkot prayed to Maa Jalpa, and promised that he would celebrate a festival in her name if she forced the king's army back towards Kullu. This is exactly what happened as Jagat Singh's army was driven back by the heavy monsoons. Thus, the Gadagusain fair is celebrated to this day each year towards the end of July.

Bhuvneshwari, B.A. III year

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृत नाम देववाणी भारतवर्षस्य समृद्धा भाषा अस्ति । प्रायशः अखिल भारतीय भाषाणां जननी इयं संस्कृत भाषा एव । संस्कृत भाषात् एव ग्रीक लेटिन प्रभतयः निखिलाः जगद् भाषाः प्रादुर्भवन् इति भाषा तत्त्वविदां मतम् । अस्याः भाषायाः एव इदम् असाधारणं गौरवं यत् विश्वपुस्तकालस्य प्राचीनतमाः ग्रन्थाः ऋग्वेदादयः संस्कृत भाषायामेव उपलभ्यन्ते । अस्यामेव भाषायाम् अस्माकम् प्रसिदाः ग्रन्थाः वेदाः उपनिषदाः पुरागानि रामायणं महाभारतं, गीता, दर्शनशास्त्राणि च रचिताः सन्ति । येषाम् अध्यायनार्थं संस्कृतस्य ज्ञानम् अपेक्षणीयमास्ति । प्राचीनैः आचार्यैः भौतिक-ज्ञानक्षेत्रे विविधानः विषयान् आश्रित्य बहवाः ग्रन्थाः विरचिताः । दक्षिण भारते अपि संस्कृतस्य सम्मानः क्रियते । तत्र तेलगुः, मलयालम, कन्नडः तमिल भाषाश्च संस्कृते निष्ठाः सन्ति ।

अस्माकं षोडशसंस्कारः संस्कृतेनैव सम्पाद्यते । अस्माकं देशस्य मुद्रायां राष्ट्रीय चिन्हेऽपि 'सत्यमेव जयते' लिखित अस्ति । अन्येषु विविधेषु विभागेषु अपि संस्कृतभाषायां आदर्शवाक्यानि लिखितानि सन्ति । यैः संस्कृतस्य महत्त्वं गौरवं च स्पष्टमेव भवति । एषा वाणी ज्ञानस्य विज्ञानस्य परमं निधानमस्ति । एषा हि मानवीय मुल्यानां विकासं करोति । विश्वबन्धुत्वस्य भावना च बर्धयति । अधुना चिन्तनीयं विषय एषः यत् अद्यत्वे एषा हि ज्ञानस्य कोशमस्ति संस्कृत बलेन योगगुरुणा श्री रामदेवेन लक्षाधिकेभ्यः जनेभ्यः आजीविका ज्ञानं च दीयते ।

जयतु संस्कृतम्, जयतु भारतम्

गुम्मा, नरेन्द्र कुमारः, बीए प्रथम वर्ष

The Walking Shark

Apart from being capable swimmers, the epaulette sharks can also walk along the seafloor and on land when necessary. They belong to the hemiscyllium family which is the newest lineage of sharks on earth. The hemiscylliidae belong to the order Orectolobiformes, commonly known as longtail carpet sharks or bamboo sharks. They are relatively small sharks, with the largest specimens reaching no more than 121 cm in length. They are found in shallow waters of the tropical Indo-Pacific region and were discovered in May 2022.

Gulshan, B.Sc. III year

समाजे स्त्रियां स्थितिः

अस्माकं समाजे स्त्रीस्वातन्त्र्यस्य आत्मनिर्भरतायाः च विषये सर्वदा प्रश्नाः उत्थापिताः सन्ति । यदा स्त्रियः सर्वदा आश्रिता दृश्यन्ते तदा किं वयं कदापि तेषां आश्रयस्य पृष्ठतः कारणानि ज्ञातुं प्रयत्नम् अकरोम ।

अस्माकं समाजे महिलानां भूमिका अतीव महत्त्वपूर्णा अस्ति । तथा च वयं महिलासशक्तिकरणस्य विषये बहु वदामः । तथापि प्रश्नः अस्ति यत् अस्माभिः किमर्थं सर्वथा तस्याः विषये चर्चा कर्तव्या? किमर्थं वयं कदापि पुरुषसशक्तिकरणस्य विषये न वदामः? स्त्रीणां जीवने प्राचीनकालात् एव उत्थान-अवस्थाः सन्ति, अवगन्तुं हि वैदिककालस्य स्रोतानुसारं स्त्रियः सर्वविधाः अधिकाराः स्वतन्त्रता च दत्ता आसन् । समाजे तेषां गौरवपूर्णं स्थानं आसीत्, तेषां शिक्षायाः अधिकारः आसीत्, सम्पत्तेः समानाधिकारः, तथा सार्वजनिकसभासु समितिषु च भागं ग्रहीतुं स्वतन्त्रता तस्य कालस्य स्रोतांशस्य अनुसारं वैदिक-काले धार्मिकसांस्कृतिककार्यक्रमेषु महिलाः सक्रियरूपेण भागं गृहणन्ति स्म । केषाञ्चन स्तोत्राणि अपि वेदेषु रचिताः आसन् तेषां नामानि अपि उल्लिखितानि सन्ति । यथा सवित्री, समी, अपाला घोषा आदि ।

परन्तु क्रमेण अन्धविश्वासाः, निकटचित्ता च समाजे प्रसृताः । स्त्रियः शिक्षादिसामाजिककार्यात् दूरं स्थापिताः, तयोः जीवनं गृहस्य चतुर्भिर्दिषु एव सीमितमासीत्, मध्यांतरे बाह्यकार्यं आर्थिकावश्यकतानां च पूर्तये पुरुषाणां इति विचारः समागतः । समाजं पुरुषप्रधानं कर्तुं सतीप्रथा, बालविवाहः, परदाप्रथा इत्यादयः स्त्रियाः उपरि प्रतिबन्धाः कृताः, मासिकधर्मस्य नामधेयेन अन्धविश्वासाः प्रसारिताः या स्त्रियाः स्वाभाविकी प्रक्रिया अस्ति । मासिकधर्मयुक्ताः स्त्रियः अशुद्धाः इति मन्यन्ते स्म तथा च ते गृहेभ्यः बहिः स्थापिताः आसन् । यदि वर्तमानस्य विषये वदामः तर्हि एतादृशाः अन्धविश्वासाः अद्यापि ग्राम्यक्षेत्रेषु विद्यन्ते, यत्र अस्माकं देशस्य अधिकांशजनसंख्या निवसति ।

वर्तमानेऽपि पुरुषा आत्मनिर्भराः उच्यन्ते किमर्थं च स्त्रियः पराश्रिताः । एवं स्त्रियः आश्रिताः एव तिष्ठन्ति इति अवगन्तुं अस्माभिः इतिहासे पश्चात् द्रष्टव्यं तथा च अवगन्तुं आवश्यकं यत् एतादृशसामाजिक-आर्थिककारणानां कारणेन स्त्रियः आश्रिताः कृताः, यत् तेषां स्वातन्त्र्यं अधिकारं च अपहृतवान् । पितृसत्तात्मकसमाजेषु यत्र पिता सम्प्रति महिलानां आत्मनिर्भरतां प्राप्तुं "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ", 'महिलासशक्तिकरणम्' इत्यादीनि अभियानानि प्रचलन्ति, परन्तु पदपि वयं पश्यामः यत् महिलानां विकासः, सहभागिता च पुरुषणामपेक्षया बहु न्यूना अस्ति । प्रधानमन्त्रिपदस्य विषये वदन्तः वयं पश्यामः यत् अद्यपर्यन्तं पंचदशे प्रधानमन्त्रिगणः

निर्वाचिता येषु एकः एव महिला प्रधानमन्त्री अभवत् ।

एतादृशाः अन्तरालाः अपि निराकृताः भवन्ति यत् स्त्रियाः पराश्रिताः सन्ति अतः ताः देशं कथं चालयिष्यन्ति इति । यत् स्त्रियाः आत्मसम्मानं इति करोति । एतानि सर्वाणि दृष्ट्वा अहं मन्ये यत् यदि प्राचीनकालात् एव एतादृशः भेदभावः स्यात् तर्हि सम्प्रति अधिकांशतः महिलाः आत्मनिर्भराः च स्युः ।

निगमन..

अस्माकं देशे पर्दाप्रथा अन्यदोषाणां निराकरणानन्तरं अपि महिलाः अतीव हाशियाः भवन्ति । यदि वयं राजनैतिकस्तरं पश्यामः तर्हि महिलानां आरक्षणं अपि पंचायत-जिलाराज्यराष्ट्रचस्तरस्य च अत्यल्पं प्रतिनिधित्वं क्रियते, यत् चिन्ताजनकं विषयम् अस्ति । ते सशक्ताः भूत्वा स्वअधिकारकर्तव्ययोः विषये अवगताः भवेयुः इति शिक्षायाः उपरि बलं दातव्यम् । ग्रामीणक्षेत्रेषु महिलायाः जागरूकतायाः निमित्तार्थं सर्वकारेण विविधाः कार्यक्रमाः चालिताः भवेयुः । येन महिलाः सर्वकारेण चालितानां योजनानां परिचयं प्राप्नुवन्ति तथाच ते समाजस्य विकासे अपि महत्त्वपूर्णं योगदानं दातुं शक्नुवन्ति । सम्प्रति यदि वयं वास्तवमेव विश्वे विकासं कर्तुम् इच्छामः तर्हि महिलाः सह नेताव्याः तेषां जनसंख्यायाः समानं प्रतिनिधित्वं आर्थिकरूपेण च सशक्तिकरणं करणीयम् ।

अज्ञजलि, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

कुल्लू ता मशहूर सा

कुल्लू मनाली री आपणी शोभा, ऐ सा म्हारे देशा री आपणी निशानी । शुणा मेरे कुल्लू रे भाईयो ऐ सा हमारे कुल्लू री शोभलो कहाणी ।

भोले माहणू रा देश म्हारा शोभली सा आसा री वाणी ।

सीधे साधे रोहणा, ए सा आसा री पछाणी । नोचणे खेलणे रे सा आसरे लोका शउकी बडे, जोखे ढोलकू बजू आसे तखे होआ सी खडे । चौला भाईयो खापरे सियाणे सभी जाचा वे जाणा । शोहरु लोडी नाचणे खेलणे वे, खापरे लोडी पेटा बे खाणा । देऊ देवी रा देश हमारा, इन्हा रा भी ए बड़ा प्यार । आगे आगे हौडदा देऊ म्हारा, पीछे पीछे हौडदा लंगर सारा । की दसणा ई कुल्लू री शोभा निराली, एकी पासे सा मणिकर्ण दूजे पासे सा मनाली ।

कई बोला सी औखे बड़ा बांका सा रेड सेउ रा दाणा, जेवे कोई परदेशी आउ स बोला सी ऐवे नी मू बापस जाणा ।

— चमन जोशी, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

विद्या धन आसा 'सभी रा बड़ा धन'

म्हारी सोचा मंझे सभी का बड़ा अमीर

एक करोड़पति आसा की नाइ आसा?

ढबे हुँदा खर्ची-खर्ची खत्म ।

बड़े का बड़ो सेठ भी होई सका कंगाल ।

तेवा ऐडा कुण धन आसा जो खत्म नाई हुँदा?

चोरी भी नाई हुँदा?

मेरी सोचा मंझे ऐई धना रा ना आसा विद्या धन । यह धन लागदा पढ़ी लिखी करी कमाऊणा । एउ धना जेतरे खर्चले तेतरे बड़दा । विद्या धन कट्टे करने री कोई उमर नाई हुँदी । पहली क्लास मँझे होच्छे-होच्छे टसु दाखल हुँदा, तेता पहिले आमा बापू संगे भी बहू सिखदा । आमा बापू भी आपने शोहरु बे अच्छे संस्कार दिन्दा ।

पढ़ाई रा मतलब कुछ नया सिखणा हुँदा । आज कालके पढ़ने आले शोहरु शोहरी आपु का बड़े री कद्र नाई करदे । आज-काला रे टसू सोचा हामी का बड़ों नाई आंहदो कोहे, हामे आ सभी का बड़े । पर एडा नाइ हुँदा । हामा लोडी पढ़ी-लिखी करी आपणे आस पड़ोसा री हालत सुधारणी । स्कूले हामा बे मास्टर शोभली-शोभली गला सिखाउंदा । विद्या सा ऐडा प्रियाशा जो हमारे चउ फेरा रा निहारा दूर करदा । आपणी संस्कृति, रीति-रिवाजा री पहचान करनी हामा । यह सारा ज्ञान पढ़ी-लिखी करी इंहदा ।

पढ़ने-लिखने आले मंझे अनुशासन जरूरी आसा । अगर तिहा में अनुशासन नाई होला, तेवा तिहा री सारी चीजा बेकार । अनुशासन हमारी जिन्दगी मँजे ऐतरा जरूरी की ऐसा बगैर जिउणा मुश्किल आसा । आज काला रे शोहरु शोहरि लागे ऐसा गला बिसरदे । मेरी ऐतरी अर्ज कि पढ़ने में ध्यान लाए । शोभली गला सीखनी, तेवा हामे शोभले हुणे संगे हमारा देशा रा विकास हुणा ।

— अनिता शर्मा, वाणिज्य, तृतीय वर्ष

छतरी आला रिश्ता

यह कथा सा कुल्लू रे कलेहली ग्रां री। एकी घरे रहन्दा थी नौ टबर, आमा-बापू सगे पांज शोहरी, दुई शोहरु। एकी बारी बड़ी शोहरी बे आउ एकी शोहरु रा रिश्ता खराल ग्रां का।

एक धियाडी सा शोहरु आउ आपणे आमा बापू संगे तेसा हेरदो। सह शोहरु थी ग्रा र, तेउए थी झिकडे भी होरे जे बाहने दे। ऊना र कोट बाहनु द, संगे सुथण बाहनी दी, जांघा नाईलूना री पुला पाई दी, होर पीछे फेरे ऊना रे कोटा में 'छतरी' टांगी दी।

हेरने भालने में थी बखे मोटो-सोलो। तिहाये तेउकी झूटी चाह और बेठो मजे संगे, तेउ रे पीछे थी एक (पिलो) शरेहिणा। सा शरेहिणो थी तिहा रे सभी का होच्छे भाऊ रा। सा शोहरु थोड़ा लेटू तेउ शरेहिणे पेंदे। स होछो भाऊ आओ तेउए घीशु स शरेहिणो बोलू 'यह आदो मेरो पिल्लो'...। तेउकी स शोहरु पोडू धनि कदु साही।

थोड़ी देर करी तिहाये गला। तिहा दुइ रे घरा आले होई राजी तिहा रे रिश्ते री तणी।

नाई जेबा शोहरु आले नाटे, तेसे शोहरी करू नाई, बोलू'मांह नाई नाहणा ऐडे छतरी आले बे'..। तेस्की आमा बोलू.....'आसे नी भेड़ा वे पुछीए मुनदे'.....खरा सा ए रिश्ता। काफी टाइमा बाद तेसा शोहरी वे आउ एक होर रिश्ता झीडी ग्रा का। शोहरु थी सरकारी बसा रा झ्राईबर, भालने वे थी बखे शोभलो। तेसा शोहरी वे भी आओ स पसंद। शोहरी रे घरा आले भी होई राजी तिउ री तणी।

शोहरी वे जो पहिलो छतरी आलो रिश्ता आउदा थी सा नी कीछ करदो थी उझा का मोटो।

एवा घरा आले होई दूजे रिश्ते वे राजी, पहिलो होऊ बाश। तमा सभी वे एक गल खोजु ...ब्याह करने वे, लाडी आणने तणी ..लोडी शोहरु काम करने आलो, ढवे खटणे आलो।

जो शोहरु कमाउदो नी किच्छे आपणे माँ बापू पेंदे हुँदा निर्भर तिउ रे लाडी बच्चे हुँदा गरीब। सह रिश्ता ज्यादा टाईमा तक नाई टिकदा।

— यश पाल, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

देऊ शेषनाग री 'लोककथा'

देऊ शेषनाग जी जीभी घाटी रे बड़े खास देऊ आसा दे। कई लोका देऊ शेषनागा बे देऊ जीभी भी बोलदा। श्री शेषनाग देऊ रा निवास स्थान 'चेंउट' ग्रांए आसा। याहा रा जन्म 'दुर्गामाता' री गोद में होउ दा। इया थी अटाहर नाग। या मे का खास आदे बालु नाग, मांहु नाग, रयालु नाग, बास्की नाग। एडा बोलदा दुर्गा माता रा निवास 'सरेउलसर' आदा। या अटाहर नागा रा जन्म भी तखी होउदा।

हमारे बुजुर्ग बोलदा कि एक बार माता दुर्गा नाठी बागे पानी आणदी होर 'माता बुडिनागिन' वे बोलू यहा रा ध्यान डाहे। माता नाई थी भाले दे तिहा नाग आज तणी। माता भाली तिया आज पहिली बारी होर माता बुडीनागिन डरी बखे। तेसे शोटी छेके छेके राख तिहा पेन्दे। कई नाग दूरी दुर्गा माता सेटा, एक नाग घजेऊ माता दुर्गा आपणी जीभा हेठे। तेउकी पडु एउरा न जीभी नाग।

ऐड़ा बोलदा राजा परिक्षित करी या 17 नाग नष्ट। राजा परिक्षिते पाउ एक मुंओ द सर्प 'लोमश ऋषि' रे गले। तेउकी ऋषि दिना तेउबे श्राप ... 'यह सर्प ता वे खाए'...। दूजे धियाड़े राजा परीक्षित लागो दो थी आपणे बागे फुला चुंगदो। तिहा फुला मंजे थी सहे नाग। तेउए ढाही या फूल कमरे मितर संगे करू कमरो शोभले तरीके का बन्द।

तेउए सोचु कि एवा नी इच्छि सकदे सर्प भीतरा वे। जेबा स सर्प फुला का निखतो तेउए खाऊ राजा परीक्षित, संगे मुओ स।

बाद में तेउरे शोहरु करी तपस्या कि मांह करने या सारे नाग नष्ट। तेउए सीखी मंत्र विद्या संगे करी सारे नाग नष्ट।

लास्टा मे एक सर्प गोजू 'शिव जी' रे गले। शिव जी करी प्रार्थना कि एउ शेष रूपा में देआ रहणे।

यह नाग आ दो एबरे भी शिव जी रे गले मँजे। एऊ सावे पडु एउ रा ना 'शेषनाग'।

यह आ दो देऊ शेषनागा रो पुराणी लोकथा।

— पूजा देवी, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

पहाड़ी शब्दों का अर्थ हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में

पहाड़ी	हिन्दी	अंग्रेजी	पहाड़ी	हिन्दी	अंग्रेजी
दोत	सुबह	Morning	ताकि	खिड़की	Window
खुड़	गौशाला	Cow barn	वौण	जंगल	Forest
धुंगर	छत की खिड़की	Roof Window	बाउड़ी	रसोई	Kitchen
मांणछी	पुराने ट्रंक	Boxes	शाणा	ताला	Lock
घर्ट	घाट	Flour Mill	शलैगी	झूठा	Lier
डाल्डू	बांस की टोकरी	Bamboo basket	सोथरा /		
भूंग	किल्टा	Conical basket	साथर	बिस्तर	Bed
व्याली	शाम का खाना	Dinner	खेच	खेत	Farm
चौला	परनाला	Sink	बुट्टे	पेड़	Tree
खौण्ड	चीनी	Sugar	छाप्पर	छत	Roof
थीपु	रुमाल	Scarf	पोखर	तालाब	Pond
टुन्जे	दस्ताने	Mittens	झुका	लकड़ी	Wood
कंही	कहां	Where	ईज	माता	Mother
श्टाबरी	शरारत	Naughty	बाब	पापा	Father
		Behaviour	माड़ा	बुरा	Ugly
चादरू	पट्टू	Long Shawl	जाचा	मेले	Fairs
नरेल	हुक्का	Hookah	हठ	जिद	Tenacity
शेला	ठंडा	Cold	इंदी	यहाँ	Here
छार	राख	Ash	तन्दी	वहाँ	There
चलूला	झाडू	Broom	जी वाणी	कृप्या	Please
छाबड़	टोकरी	Basket			
गेठा	अंगिठा	Fireplace			

– रमेश चंद, कला स्नातक, प्रथम वर्ष
– भानु प्रिया, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

Horn Dance

The horn dance is a traditional folk dance performed in the cold and dark nights of January in the valleys of Kullu district, including Banjar. It is said this dance was first organized to get rid of an evil king of Kullu. For once the king was mesmerized by the dance, some of the people cut his throat and killed him. The horn dance now continues to this day in order to commemorate this event.

The dance is first performed in a temple after which the performance goes door to door in the village. There are generally six dancers, two of whom perform as a deer by covering themselves with a single shawl and placing horns on the head of the person in front. Two other dancers are dressed up as clowns while the last two perform as a man and a woman.



- Pushplata, B.A. II year

संघर्ष ही जिंदगी है

जब मैंने ग्याहरवीं में प्रवेश किया तो मेरा एक ही सपना था कि मैं कब कॉलेज में प्रवेश करूंगी। इसलिए मैं अपनी पढ़ाई में इतनी डूब गई कि मुझे पता ही नहीं चला कि कब मेरी बारहवीं हो गई और मैं कॉलेज में प्रवेश कर गई। जब मैंने 2019 में GDC बंजार में प्रवेश किया उस दिन बहुत खुशी हुई कि मेरा कॉलेज जाने का सपना पूरा हुआ। मैंने अगला सपना देखना शुरू किया और कॉलेज के साथ-साथ उसके लिए भी मेहनत करना शुरू किया।

अचानक मार्च 2020 में मेरी शादी हुई, तो मुझे लगा मेरा कोई भी सपना पूरा नहीं होगा। अब जिंदगी में शायद मैं कुछ भी न कर पाऊँ। परंतु जब मैंने अपने पति से इस बारे में बात की तो मुझे निराश नहीं होना पड़ा। उन्होंने मुझे पढ़ने की पूरी आजादी दी। मुझ पर विश्वास करके हर कदम पर मेरा साथ दिया और हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया। उनका यह व्यवहार देख कर मुझे और हिम्मत मिली और मैंने अपनी पूरी मेहनत और ईमानदारी से काम किया जिसका मुझे अच्छा परिणाम मिलने लगा।

मैं अपने माता-पिता की भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने जो खुद ज्यादा पढ़े-लिखे ना होकर भी मुझे इतना पढ़ाया कि मैं अपना निर्णय खुद ले सकूँ। पैसों की कमी होते हुए भी मुझे कभी कमी महसूस नहीं होने दी। मुझे इतना काबिल बनाया कि मैं अपनी आगे की पढ़ाई के बारे में कुछ सोच सकूँ।

हालांकि मेरा कॉलेज 2022 में ही कंप्लीट होना था परंतु बीमार होने की वजह से मुझे एक साल और कॉलेज को देना पड़ा। पहले मुझे बहुत दुख हुआ कि मेरा एक साल बर्बाद हो गया परंतु इस एक साल ने मुझे बहुत कुछ सिखाया, जो कभी मुझे कोई और नहीं सिखा सकता था। मेरे कॉलेज से भी मुझे पूर्ण सहयोग मिला। मेरे प्राध्यापकों ने भी मुझे हर कदम पर मोटिवेट किया। मेरी जूनियर क्लास, जिसके साथ मुझे अब बैठना था, उस क्लास के विद्यार्थियों ने भी मुझे बहुत प्यार और सम्मान दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सालों से इन्हीं के साथ पढ़ाई कर रही हूँ।

अतः इस एक साल की वजह से मुझे GDC बंजार में नये-नये प्राध्यापकों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जिन से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। जब भी मुझे कुछ समझ नहीं आता था, तो ना केवल सिर्फ मेरे सब्जेक्ट के प्राध्यापक मेरी सहायता करते थे, बल्कि दूसरे सब्जेक्ट के प्राध्यापक भी मेरी सहायता करते थे। अतः मैं उस प्यार और सम्मान के लिए इस महाविद्यालय की जीवन पर्यन्त आभारी रहूंगी।

मैं अपने छोटे भाई-बहनों के लिए यही संदेश देना चाहती हूँ कि आप शिक्षा के महत्व को समझें और अपने लिए खुद स्टैंड लेना शुरू करें। अपना लक्ष्य निर्धारित कर के उसके लिए अभी से ही मेहनत करना शुरू करें क्योंकि यदि हमें ऊंचाइयों पर जाना है, और

अपनी मंजिल को पाना है, तो हमें कंटीले रास्तों पर चलना ही होगा। यह जरूरी नहीं है कि हमें एक बार में ही सफलता मिल जाएगी। अगर अपनी मंजिल को पाना है तो हमें असफल होने के बाद भी एक नये अनुभव के साथ निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए "क्योंकि किस्मत से जिंदगी बदलती है या नहीं मुझे नहीं पता, लेकिन मेहनत से जिंदगी को जरूर बदला जा सकता है"।

मेरा इन सभी बातों को बताने का केवल एक ही उद्देश्य है कि आप अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए जल्दी से जल्दी प्रयास शुरू करें। किसी भी दूसरे व्यक्ति के ऊपर निर्भर ना रहे, आत्मनिर्भर बन अपने माता-पिता, महाविद्यालय और अपने प्रदेश का नाम उंचाईयों तक ले जाएं। मैं चाहती हूँ कि जो बातें मुझे देर से पता लगी हैं, वह आप को जल्दी पता लगे। ताकि आप सभी इन बातों पर विचार करें और अपने जीवन को और भी बेहतर बना सकें।

क्योंकि मेरी जिंदगी में एक समय ऐसा भी था जब न रहने के लिए घर था, ना आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी थी और एक तरफ तेज रफ्तार से कोरोनावायरस का दौर भी चल रहा था।

कोरोनावायरस ने ना जाने कितने घरों की रोजी-रोटी तक छीन ली थी। भगवान की कृपा से रोजी-रोटी तो ठीक से चल रही थी परंतु और बहुत सी मुश्किलें थीं, जिनका रोज सामना करना पड़ता था। धीरे-धीरे हमारी आर्थिक स्थिति ठीक होने लगी और मैंने अपनी स्टडी पर फोकस किया। मैं आप सभी से यही कहना चाहती हूँ कि बुरे हालातों में कोई साथ नहीं देता इनका सामना हमको खुद ही करना पड़ता है। हालांकि मेरी पढ़ाई छूटने की कगार पर ही थी परंतु मैंने खुद को सकारात्मक रखते हुए और इसे ईश्वर की मर्जी समझते हुए फिर से प्रयास किया और मुझे बहुत अच्छा परिणाम मिला।

मेरे माता-पिता, मेरे पति व मेरे ससुर जी के सहयोग से और उनकी प्रेरणा से मैंने अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की और अब मैं इस कॉलेज से जाने वाली हूँ।

GDC बंजार से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। इस महाविद्यालय से मेरी बहुत सारी यादें जुड़ी हैं। यह मेरे लिए एक शिक्षण संस्थान ही नहीं बल्कि मेरी सफलता की पहली सीढ़ी है। मैं अपने सभी भाई बहनों को यही कहना चाहूंगी कि हमें बड़े से बड़े सपने देखने चाहिए क्योंकि सपने पूरे होते हैं, यदि हम सही दिशा में मेहनत करते हैं। यदि हम पांच दस बार भी असफल होते हैं तो हमें हमेशा एक और प्रयास जरूर करना चाहिए। हमें सफलता जरूर मिलेगी। क्योंकि-"रास्ते में चलते चलते पत्थरों से मुलाकात हो ही जाती है, तो टकराते ही रहना।

अगर जिंदगी में आकर मुसीबतों के पहाड़ भी टूट पड़े, तो मुस्कराते ही रहना।"

बुरे हालातों में लोगों के ताने और अपनों का बुरा व्यवहार व्यक्ति को सिर्फ दुख ही नहीं देता बल्कि वह अंदर से टूट कर बिखर जाता है। यह एक बहुत ही असहनीय पीड़ा होती है। खासकर जब

हमारे अपने ही हमें दुख पहुंचाते हैं और भला बुरा कहते हैं। इसलिए हमें अंदर से इतना मजबूत बनना है। चाहें कुछ भी हो जाए हार नहीं माननी है। अपने लक्ष्य से नहीं भटकना है। गूंगे और बहरे बनकर आगे बढ़ते रहना है। क्योंकि लोग हमारी कामयाबी से जलेंगे ही और हमारी नाकामी पर हंसेंगे भी। ऐसे लोगों के लिए हमारी सफलता से बड़ा कोई और जबाब नहीं हो सकता है। फिर चाहे वह हमारी पढ़ाई की बात हो या हमारी निजी जिंदगी की बात हो। क्योंकि—"सब कुछ खोने के बाद भी अगर हम में कुछ करने की हिम्मत है, तो समझ लीजिए हमने कुछ नहीं खोया है"।

यदि हम सफल हो जाए तो हम अपना जीवन तो बदल ही सकते हैं पर साथ में दूसरों का जीवन भी बेहतर बना सकते हैं। इस बात को अपने दिमाग में बिठा लें कि यदि हम सफल हो गए तो पूरी दुनिया हमारी है और यदि हम असफल रह गए तो दुखदाई जिंदगी व्यतीत करने के साथ-साथ हमें बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना होगा। इसलिए यह अति आवश्यक है कि हमें एक अच्छे इंसान बनने के साथ-साथ जागरूक होना भी जरूरी है। ताकि हम अपने समाज, प्रदेश व देश के कार्यों में अपना योगदान दे सकें।

अंत में कुछ चंद पंक्तियां युवा साथियों के लिए—

"बुझने लगी हो आंखें हमारी, चाहे थम रही हो रफ्तार,
उखड़ रही हो सांसे हमारी, दिल करता हो चित्तकार,
दोष विधाता को ना देना, मन में रखना यह आस,
रणविजयी बनता वही,
जिसके पास हो आत्मविश्वास आत्मविश्वास।"

अनीता शर्मा, बी.कॉम, अंतिम वर्ष

Soft Skills

Soft skills are desirable qualities for employment and career growth that do not depend only on acquired knowledge but include common sense, flexibility and the ability to deal with different kinds of people. Communication is one such key soft skill, requiring good command over one's language such that one knows how to use the right words at the right place and the right time.

Thus in one sense, soft skills relate to who people are rather than what they know, reflecting through body language, personality, tone, vocabulary, etc. For instance, even doctors require soft skills as apart from their medical expertise, they must have good listening skills and bedside manners. Therefore, nowadays employers give great importance to soft skills while selecting their employees.

Some of the common skills that the employers look for are as follows: positive attitude, good communication skills, time management abilities, problem-solving skills, team spirit, and the ability to accept and learn from criticism.

Anita Sharma, B.A. III year

Importance of English for Students

English is an international language and most people understand it across the world. Over time, it has become a storehouse for all kinds of knowledge and so, more and more people are devoting their time to study the English language. In many countries like India, English is a part of the school curriculum from a very young age. This enables the students to overcome numerous obstacles in life as it greatly expands their career prospects even at the global stage.

Given the rapid development of our times and the increasing competition, it is very important to know English in order to stand out from the crowd. While there are thousands of languages in the world, with countries having their own national languages, English serves as a common language so that humans from across the globe can communicate with each other. Thus, it helps maintain international relations along with helping in the growth of science, technology, business, education, tourism and so on.

"Nothing is difficult in this world if you have a little courage.
You will change your dreams to reality if only you try a little."

Anita Sharma, B.A. III year

Status of Women in Society

In our society, questions have always been raised regarding women's independence and self-reliance. While women have always been seen as dependent, have we ever tried to know the reasons for their dependence?

Women play a very important role in our society, and we talk about women empowerment a lot. However, the question is why do we need to talk about it at all? Why do we never talk about male empowerment? The life of women has involved ups and downs since ancient times. For instance, in the early Vedic period (1500 BCE to 1000 BCE) women were given all kinds of rights and freedoms.

They held a dignified place in society and had the right to education, along with equal rights to property as well as freedom to participate in public assemblies and committees.

According to the sources from that period, women used to actively participate in religious and cultural programs. They also used to participate in *yagyas* alongside men and were allowed to study the Vedas. Some women like Savitri, Yami, Apala and Ghosha even composed several hymns in the Vedas.

But gradually, superstitions and close-mindedness spread in the society. Women were kept away from education and other social work, and their lives were confined to the four walls of the house. Meanwhile the idea that it is the role of men to fulfill external work or economic needs gathered strength. In order to make the society male-dominated, restrictions were imposed on women like Sati Pratha, Child Marriage, Parda etc. Superstitions were spread in the name of menstruation, which is a natural process that occurs in women. Menstruating women were considered impure and so, they were kept out of homes. If we talk about the present, such superstitions still exist in rural areas where most of the population of our country resides.

Thus, to understand why women remain dependent we need to look back in history and understand that women were made dependent due to such social and economic reasons, which took away their freedom and authority, resulting in patriarchal societies where the father remains the head of the household with the authority to make all the decisions. At present, campaigns like 'Beti Bachao, Beti Padhao' and 'Women Empowerment' are being run to make women self-reliant but in spite of this we still find that the development and participation of women is much less than men. Talking about the post of Prime Minister, we find that till date 15 Prime Ministers have been elected out of which only one was female.

Such gaps are also dismissed by saying that women have a habit of being dependent on others, so how will they run the country? Such statements obviously hurt the self-respect of women. After seeing all these things, I believe that if such discrimination had been prevented since ancient times, then at present most of the women would have been self-sufficient.

In conclusion, women are marginalized in our country even after the purdah system and other evils have been abolished. If we look at the political level, even after getting reservation for women, very little representation is achieved at panchayat, state and national levels, which is a matter of concern. Emphasis has to be laid on education so that they become empowered and become aware of their rights and duties. Various programs and their effective implementation should be focussed upon by the government to make women aware in rural areas. This way, women can be introduced to the schemes run by the government and they can also contribute significantly towards the development of the society. At present, if we really want to develop in the world, then women must be economically empowered and represented equally in the population.

Anjali Rana, B.A. I year

Visiting Chehni Kothi

Chehni Kothi is a tall, wooden fortress located in Chehni village. It is believed that this kothi was built in 17th century AD by king Dhadhu, which is why it is also called Dhadhiya Kothi. The fortress was originally seven storeys tall but the Kangra earthquake of 1905 destroyed the top two floors and so, only five levels remain now. The height of Chehni Kothi is approximately 45 metres and it is known to be the tallest temple tower of its kind in the Western Himalayas.

Built in the traditional kath-kuni architectural style with deodar wood and stone, the fortress served as a defensive structure, providing a vantage point for the surrounding villages in case of an invasion. Due to this, the fortress did not have a permanent staircase for entering. Instead, a hanging wooden staircase was used which was pulled up once everyone was inside. Although now, a steep wooden staircase has been attached to the tower, the villagers are very strict regarding who can enter the tower. Outsiders are usually not

permitted.

After climbing this steep set of stairs, one enters a balcony. One can climb further up through another staircase inside the tower that reaches all the way to the top floor, which has a balcony projecting all around it. Herein lies the temple where idols of the local goddess are kept along with her palanquin.

Another ancient temple known as the Muralidhar Mandir, dedicated to Lord Krishna, stands next to the fortress, containing Tankri (script used for Dogri, Kangri, Chambyali, Kullvi and many other Himalayan languages) inscriptions on its walls. Another nearby temple worth visiting is that of Lord Shringa Rishi, who is the presiding deity of the Banjar region.

From Chehni, one can also walk to Miyagi village for some breathtaking views of the surrounding peaks. There is also a waterfall near the village, beyond which one can even trek up to Bashir village.

Durgeshwari, B.A. II year

The Devotion of Mathru

Once upon a time there was a man called Mathru living in Kanoun village in the Sainj region. In this village whenever someone's cow gave birth, the man of the house had to fast for three days before offering ghee at the temple of the kuldevta (or clan deity), which stood on a high hill far away from the village. Only then could the cow's milk be used.

Thus, when a cow gave birth to a calf in Mathru's house, he too fasted for three days before proceeding towards the temple. The journey normally took about two days but since it had been snowing, the trek was full of difficulties. At one point, Mathru kept slipping back to the same spot even after numerous tries to climb the slope. Meanwhile, the snow kept falling. Mathru tried to reach the temple for almost a week but remained unsuccessful.

In the end, being completely exhausted, Mathru made a shivling out of the snow and offered ghee to it. He then prayed for forgiveness to his kuldevta, Lord Shiv for not being able to complete the journey and died at the spot.

As a tribute to his devotion, the kuldevta's temple miraculously slipped down from the top of the hill to the very spot where Mathru's corpse lay. The temple stands to this day and is known as the Shiv temple of Dugha at Kanoun.

Jyoti Verma, B.A. II Year

A Memory of Love

It was a Sunday and there was nobody at home except for my grandfather, my sister and me. Back then, my sister was in the first class and I was in the fifth. We were generally playing around while my grandfather was busy making woolen pattus on his handloom.

He was not very educated but at the time, he was still one of the most knowledgeable people in our village. The elders of the house used to seek his advice in all family matters. Since I was very close to him, I often used to ask him how educated he was. He always laughed at the question and answered that he had studied till the sixteenth standard, so I also used to say that I shall study till the sixteenth standard, not knowing what it actually meant.

That Sunday, my sister and I had a fight. I slapped her and she began crying loudly. Upon finding out what had happened, grandfather looked at me and started coming towards me with his walking stick held high. I ran around the house and he followed me. Initially I thought he was just doing this for fun but when I turned back and saw the anger in his eyes, I was thoroughly scared and kept running with tears streaming from my eyes. After our third round of the house, I suddenly changed my direction and ran into my grandmother's room, locking the door from inside. He asked me to open the door but I didn't. After a while, he seemed to go away but I was still crying in the room, feeling guilty and embarrassed because I had never seen my grandfather so angry.

Finally, I opened the door, still crying and hiccupping. My Grandfather was still standing there but his mood had changed, and as soon as he saw me, he gave me a big hug and said, "Don't do that again. It's bad manners. After all, she is your sister and it's your responsibility to teach her with love." He then gave me ten rupees and I felt overjoyed.

Bhanu Priya
B.A. I year

The Thakurs of Gushaini

After the mahapralaya, or the great dissolution, a Thakur family had been living at a place called Kot in Sungcha village (near Gushaini). The Thakur patriarch didn't have children of his own, so he went to a place called Tirath and prayed to Lord Brahma at the Hanskund there. Pleased by the Thakur's yagya, Brahma revealed two baby girls from the waters of Hanskund whose names were Jau and Sau. Thereafter, more children were born to the Thakur lineage, eventually branching into 180 different families.

With time, these Thakur descendants began to lose faith in their ancestral deity Shri Sankadik Rishi. The deity then prayed to Lord Brahma, who hit the earth with his great hammer, destroying several of the Thakur families along with their properties. The remaining families migrated to Tinder, Sainj, Dehori and Dushahd while the patriarch, his wife and the divine daughters moved to a place called Arsu near Dethwa. The Thakur invited an artisan from Sharchi village to build him a house. Pleased with the artisan's work, the Thakur granted him a boon. The poor artisan simply said, "Give me jo-so (anything) that you please." Puzzled, the Thakur thought that the artisan was asking for one of his daughters, Jau and Sau. Bound by his word, the Thakur then gave away Jau in marriage to the artisan.

The artisan and his bride stopped near Gushaini by the Tirthan river for the night. The artisan began cooking while he sent her to the river to fill water in his hookah. Jau was not happy with the match, so she kept the hookah by the riverside and merged into the waters. After a while, the artisan himself came to check upon her and was surprised to find the hookah but no trace of his bride.

Pallavi Thakur, B.A. I year

Major Scientific Discoveries that changed the World Forever

Fire: Fire can occur in natural events, but the prehistoric discovery that humans could start a fire at will and use it for cooking, warmth and burning was intrinsic to the development of homo sapiens, and is a key factor that separates them from other creatures. Fire is not only important from a practical viewpoint, but also as a metaphysical concept and an intrinsic aspect of life.

Wheel: The first wheel was invented around 4500 BCE and used as a potter's wheel. However, once spoked wheels started being used for chariots (around 2200 – 1550 BCE), human transportation became completely transformed.

Writing: The earliest forms of writing go back to the 4th millennium BC in Egypt where archaeologists have found hieroglyphics engraved on stones. Writing as a medium of record-keeping and communication completely revolutionized the human world, as apart from many other things, they could now transfer ideas across time and space.

Paper: Papermaking is associated with a Chinese official called Cai Lun during the Han Dynasty (202 BCE - 220 CE). Lun is said to have invented paper by using mulberry and other fibres along with fishnets, old rags and hemp waste.

Heliocentric view of the world: In 1619, Johannes Kepler published the third law of planetary motion which proved that the earth revolved around the sun instead of the other way round. This completely changed the traditional Biblical worldview which believed earth to be the centre of creation, and also helped to prove that the earth was not flat but circular.

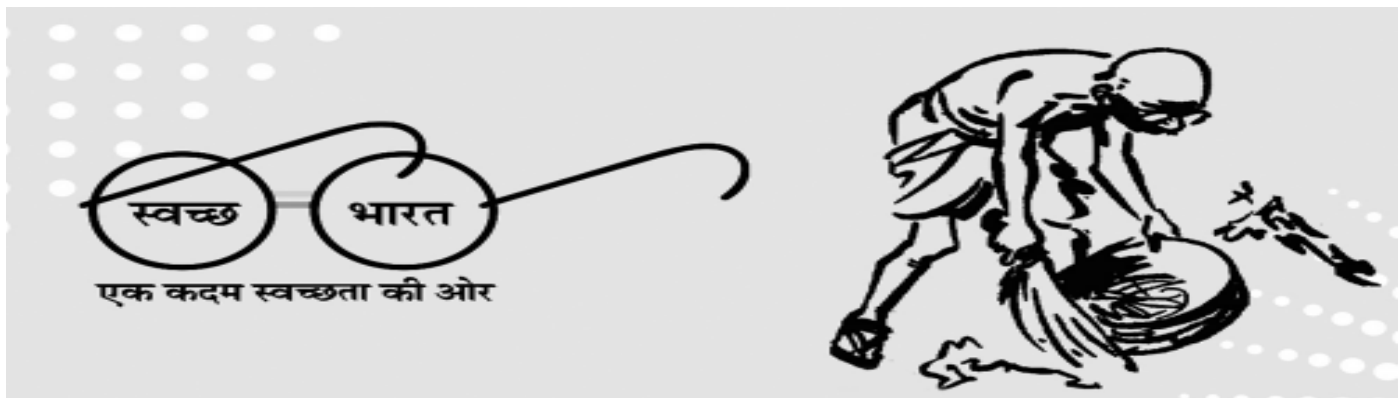
Gravity: In 1687, Isaac Newton formalized the fundamental laws of gravity, which explained how large objects could exert a force of attraction. He also proposed the three laws of motion, which describe the relationship between different forces on objects.

Electromagnetism: In 1820, Danish scientist Hans Christian Orsted made investigations into the relationship between electricity and magnetism. Orsted discovered that an electric current could deflect a magnetic compass, which later helped Michael Faraday to cause an electric current to flow through a wire by using a magnet. Faraday found that a copper wheel passed through a horseshoe magnet could create a constant stream of electricity.

Theory of Evolution: Charles Darwin published his book, *The Origin of Species* in 1859. It described the radical view that humans evolved from the animal kingdom, and that the world was much older than previously thought. By the 1930s, his theory was widely accepted by the scientific community.

Theory of Relativity: It is one of the most groundbreaking discoveries ever made in the field of physics. Albert Einstein's theory mainly described the mechanics of fast-moving bodies travelling almost at the speed of light. One of the key takeaways was that the perception of time depends on the speed and relative motion of the perceiver, and that time travel is theoretically possible.

Shaurya Sharma, B.Sc. III year



Amazing Scientific Facts

1. Why do ants carry dead ants?

This behavior has to do with the way ants communicate with each other via chemicals. When an ant dies, its body releases a chemical called oleic acid. Ants carry dead bodies away to reduce the risk of contamination or infection.

2. Otters hold hands while sleeping :

Otters sometimes hold hands while sleeping in the sea, so that they don't drift apart.

3. Trees can communicate :

Acacia trees in Africa communicate with each other. In case of an attack, they emit gases (like ethylene) to alert other trees to produce the toxin tannin, which protects them.

4. Why does rain smell good?

The smell of rain is caused by gases released by freptomycetle bacteria in the earth in reaction to rainwater. This smell is called petrichor.

5. Hottest place on the Earth :

Death Valley in California, USA holds the record for the highest air temperature on the planet.

6. The mystery of earth's oceans :

We have only explored less than 5% of the earth's oceans. In fact, we have better maps of Mars than of the earth's ocean floor.

7. Blue blood of octopus :

Octopuses have copper-based blood instead of iron-based blood, which is why their blood is blue instead of red.

8. Darkness for over two months :

In the town Barrow, located in Alaska (USA), the sun sets in mid-November and rises towards the end of January.

9. Eye color :

Reindeer eyes change colour with the seasons. Their eyes turn blue in the winter to help them see in the dark and return to a golden colour in the spring and summer.

10. Wrinkled fingers after getting wet :

Our fingers get wrinkly in water because such fingers would give us stronger grip on slippery objects under water.

Lakshmi Negi, B.Sc. III Year

Amazing medical facts about the human body

- A red blood cell can navigate through the entire human body in under 20 seconds.

- We exercise at least 36 muscles while smiling.

- The human body makes around 0.5 to 1.5 liters of saliva per day.

- Human teeth are almost as hard as rocks.

- Our brain contains over a hundred billion nerve cells.

- A human kidney contains about 1 million nephrons that filter out wastes and harmful substances from our blood.

- The adult human brain is about 20% of our total body weight.

- A person can live without food for up to three months, but only 2-3 days without water.

Himani Thakur, B.Sc. III year

Interesting Facts about the Human Brain

- The brain serves as the center of the nervous system in all vertebrate and most invertebrate animals.

- Sixty percent of the human brain is made up of fat.

- The brain isn't fully formed until the age of 25.

- The brain's storage capacity is considered virtually unlimited.

- The brain information travels at an impressive speed of 268 miles per hour.

- On average, the spinal cord stops growing at 4 years old.

- The spinal cord is the main source of communication between the body and the brain.

- It is a myth that we only use 10 percent of our brains.

- The adult human brain weighs around 1200-1400 grams.

- The human brain can generate up to 23 watts of power.

Kanika Sood, B.Sc. III year

ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक परिवेश पर केंद्रित प्राथमिक सर्वेक्षण



फोटो सामार : अठारठ करण्डू

1. भलाग्रां गांव का सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य:

भलाग्रां हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला के बंजार प्रखण्ड में स्थित है। जिसके उत्तर में खुन्दन गांव (1 किलोमीटर) तथा पश्चिम में बला गांव (2.58 किमी) तथा पूर्व में बझियार गांव (1.77 किलोमीटर) व पश्चिम में जवाहड़ गांव (1.60 किलोमीटर) है। धारटी गांव दक्षिण स्थित में।

इस गांव के वार्ड का नाम 'मंदली वार्ड' है और वार्ड संख्या पांच है। भलाग्रां गांव की पंचायत बलागाड में कुल सात वार्ड हैं, जो अग्रलिखित हैं :

क्र.सं.	वार्ड का नाम	वार्ड सदस्य	वार्ड संख्या
1.	बेहलो	बृज मोहन	1
2.	भूमार	कांता देवी	2
3.	लांहुड	नेत्र प्रकाश	3
4.	खड़वाली	वीरेन्द्र शर्मा	4
5.	मंदली	शकुंतला शर्मा	5
6.	थाच	नंद लाल	6
7.	चलाहण	सरसा देवी	7
घरों की संख्या	8	पुरुष	महिलाएं
कुल जनसंख्या	44	25	19
अनुसूचित जाति	—	—	—
अनुसूचित जनजाति	—	—	—
सामान्य वर्ग	44	25	19
साक्षरता दर	69.18 प्रतिशत	77.88 प्रतिशत	59.52 प्रतिशत

मौसम तथा जलवायु

मौसम : भलाग्रां गांव की औसतन वर्षा 140 सेंमी है।

मानसून का प्रवेश — जनू मध्य

मानसून की समाप्ति — अक्टूबर माह

जलवायु : यहां की जलवायु सामान्य है। गर्मियों में यहां का तापमान 35 डिग्री सें. एवं सर्दियों में यहां का तापमान लगभग 10-15 डिग्री सें. के बीच रहता है। सामान्यतः यहां गर्मी मार्च से जुलाई एवं सर्दी (ठण्ड) अक्टूबर से फरवरी तक रहती है।

प्राकृतिक संसाधन

क. भलाग्रां की भूमि कृषि के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस गांव की कुल भूमि का लगभग 40 प्रतिशत भाग मैदान, 45 प्रतिशत भाग खेत, 10 प्रतिशत भाग वन भूमि एवं 5 प्रतिशत भाग पथरीली भूमि है।

ख. मृदा : भलाग्रां गांव में अग्रलिखित प्रकार की मृदा पाई जाती है।

1. लाल मिट्टी

2. काली मिट्टी

ग. वन : यहां की कुल भूमि का 10 प्रतिशत भाग वन क्षेत्र है। जिसमें अनेक प्रकार के पेड़-पौधे तथा जीव-जन्तु विद्यमान हैं, जिनका विवरण इस से है :

पेड़-पौधे : देवदार, चीड़, कायल, पीपल, बान इत्यादि

जीव-जंतु : सांप, भेड़िया, मोर, भालू, तेंदुआ, तीतर इत्यादि।

राजनीतिक शासन प्रणाली

क. भलाग्रा गांव बंजार विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यहां कुल मतदाताओं की संख्या 2386 है। जिसमें पुरुष मतदाता 1286 एवं महिला मतदाता 1100 है। इस विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री सुरेंद्र शौरी हैं। वे बंजार विधानसभा क्षेत्र से दूसरी बार विधायक चुने गए हैं।

ख. गांव की पंचायती राज व्यवस्था : इसकी पंचायत को सात वार्डों में विभाजित किया गया है। इस गांव के प्रत्येक वार्ड में 5-7 गांव शामिल हैं।

पंचायत के पदाधिकारियों के नाम व पद

क्र.सं.	नाम	पद	वार्ड संख्या
1.	श्रीमती चंद्रा देवी	पंचायत प्रधान	05
2.	श्री कुंज लाल शर्मा	पंचायत उप-प्रधान	05
3.	श्रीमती शकुंतला शर्मा	वार्ड सदस्य	05
4.	श्री नंद लाल	वार्ड सदस्य	06
5.	श्री वीरेन्द्र शर्मा	वार्ड सदस्य	04
6.	श्री ललित कुमार	पंचायत सचिव	07

घरों का स्वरूप : सर्वेक्षण के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि गांव के ज्यादातर मकान कच्ची मिट्टी के हैं। ज़मीन पर गोबर की लिपाई और दीवारों को चूने से रंगा गया है। घर की छतों पर चादर या खप्पर/स्लेट लगाए गए हैं। कुछ पक्के मकान भी बने हैं। गांव के लगभग 80 प्रतिशत मकान कच्ची मिट्टी के हैं तथा 20 प्रतिशत पक्के मकान हैं। इस गांव में कुल 8 घर हैं, जिनमें 6 कच्चे तथा 2 घर पक्के हैं।

शौचालय : इस गांव में लगभग 85 प्रतिशत घरों में शौचालयों की सुविधा है, जिसमें 80 प्रतिशत लोग इनका नियमित प्रयोग करते हैं। वर्तमान में लगभग प्रत्येक घरों में शौचालयों की सुविधा है।

आंगनबाड़ी केंद्र : भलाग्रा गांव में कुल दो आंगनबाड़ी केंद्र हैं। प्रत्येक आंगनबाड़ी केंद्र में पंद्रह लड़के तथा पंद्रह लड़कियां हैं। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि इन केंद्रों में अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। बच्चों और गर्भवती माताओं को हर महीने राशन भी दिया जाता है और हर महीने बच्चों का वज़न और ऊंचाई मापी जाती है, जिससे उनके शारीरिक विकास के बारे में जानकारी मिलती है।

स्वास्थ्य केंद्र : भलाग्रा गांव की तहसील बंजार में एक स्वास्थ्य केंद्र भी है, जहां ग्रामीणों का प्राथमिक उपचार होता है। इस स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव की भी सुविधा है। मवेशियों के लिए एक सरकारी पशु-चिकित्सालय भी है।

ईंधन : सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि घरों में खाना पकाने के लिए मिट्टी के चूल्हों का इस्तेमाल होता है। कुछ घरों में गैस का प्रयोग भी किया जाता है। चूल्हों में ईंधन के तौर पर लकड़ी व गोबर के कण्डे/उपले भी इस्तेमाल होते हैं।

मवेशी : गांव के ज्यादातर लोग गाय, बैल, भेड़-बकरियां पालते हैं।

दुकानें : गांव के किनारे की तरफ दो-तीन दुकानें हैं तथा साथ ही एक सरकारी राशन की दुकान भी है, जो गांव से 2 किलोमीटर दूर खड़वाली में स्थित है। यहां के ग्रामीण अपना अधिकांश सामान यहीं से खरीदते हैं।

पेयजल व्यवस्था : पीने के पानी की व्यवस्था के लिए गांव के आसपास के क्षेत्रों में 06 हैंडपंप तथा 08 बावड़ियां हैं। गांव के बीच एक तालाब भी है, जहां मवेशी पानी पीते हैं।

शिक्षा : भलाग्रां गांव की शिक्षा व्यवस्था बहुत अच्छी है। शिक्षा व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए साथ लगते क्षेत्रों में एक उच्च विद्यालय, एक माध्यमिक विद्यालय, दो प्राथमिक विद्यालय तथा एक आंगनबाड़ी केंद्र है। एक कॉलेज भी है, जिसमें कला, वाणिज्य और विज्ञान संकायों से संबंधित शिक्षा प्रदान की जाती है। हमारे द्वारा किये गए सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि भलाग्रां गांव में एक विद्यालय है, जो कक्षा आठवीं तक है। गांव के समस्त विद्यार्थी वहीं से शिक्षा ग्रहण करते हैं। उच्च शिक्षा के लिए बाहर अन्य क्षेत्रों में भी जाना पड़ता है। लड़कियों का शिक्षा का स्तर लड़कों की उपेक्षा कम है।

धर्म : गांव के सभी लोगों का धर्म हिंदू है। हालांकि गांव में अन्य धर्म के लोग भी हैं। गांव का मुख्य मंदिर त्रिपुरा बाला सुंदरी व मारकण्डेय ऋषि जी का है। दो-तीन अन्य मंदिर हैं, जो गांव के बीच में स्थित है।

जाति : इस गांव में केवल सामान्य जाति वर्ग के लोग रहते हैं। गांव के साथ लगते अन्य गांवों में जाति-व्यवस्था अभी भी विद्यमान हैं। जहां राजपूत, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व ब्राह्मण आदि हैं। इनमें सब अपनी-अपनी जाति को अपने स्तर पर उच्च मानते हैं।

वेशभूषा : भलाग्रां गांव में स्त्रियां सर्दियों में पट्टू, शॉल व अन्य गर्म वस्त्र आदि पहनते हैं। पहाड़ी इलाके में महिलाएं इसके साथ धाटू व बास्केट भी पहनती हैं।

खानपान : गांव में दाल-रोटी, चावल आदि का प्रचलन अधिक है। हरी सब्जियों का सेवन भी लोग करते हैं। अधिकतर लोग सब्जियां अपने खेतों में ही उगाते हैं तथा बाजार की रसायनयुक्त खाद्य पदार्थों से दूर रहते हैं। यह पाया गया कि लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर अधिक जागरूक हैं।

व्यवसाय : यहां के ग्रामीण अपने द्वारा उत्पादित अनाजों, सब्जियों, दूधादि को नज़दीक की मण्डियों में बेचते हैं। कृषि-बागवानी से लोगों की आय में वृद्धि हुई है तथा इनका जीवन-स्तर भी बढ़ा है।

आय के स्रोत:

1. मज़दूरी, 2. गाड़ी चलाना, 3. व्यापारी, 4. सरकारी नौकरी, 5. गैर-सरकारी नौकरी, 6. ईंधन हेतु लकड़ी बेचना तथा 7. कृषि-बागवानी इत्यादि।

भलाग्रां गांव के बहुत-से लोग गैर-सरकारी नौकरी करते हैं। कुछ लोग सरकारी नौकरी में भी हैं तथा कुछ मज़दूरी करके आय कमा रहे हैं।

इस गांव तथा साथ लगते क्षेत्र में सरकारी तथा गैर-सरकारी नौकरियों से सम्बद्ध व्यक्तियों का विवरण निम्न है:

पद	सरकारी	पद	गैर-सरकारी
	संख्या		संख्या
शिक्षक	07	शिक्षक	13
कर्मचारी	03	वकील	06
दरोगा	02	कंपनी वर्कर	17
पोस्टमास्टर	04	सी.ए.	19
प्रोफेसर	01		

फसलें :

1. **खरीफ की फसलें :** धान, मक्का, राजमाह, सोयाबीन (अक्टूबर-नवम्बर)

2. **रवि की फसलें :** गेहूं, सरसों, मटर, आलू इत्यादि। (फरवरी-मार्च)

भलाग्रां गांव के 65 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं।

निष्कर्ष : सर्वेक्षण के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यह ज्ञात हुआ है कि इस गांव के लोगों का जीवन स्तर सामान्य से अच्छा है। लेकिन कुछ समस्याओं से ग्रस्त हैं, जैसे—

क. गांव की सफाई व्यवस्था चरमराई है। गांव के चारों ओर प्रत्येक गली-मोहल्लों में ईटरलॉकिंग तथा आरसीसी हो रही है। लेकिन नालियों की सफाई समय से न होने के कारण वह अवरुद्ध हो रही है। गांव के जन-प्रतिनिधियों को उनका कर्तव्य निभाने की आवश्यकता है।

ख. इस गांव में कोई कुटीर उद्योग नहीं है।

ग. गांव में पूर्ण रोजगार नहीं होने के कारण यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो रही है, जिस कारण अधिकतर लोग गांव से बाहर काम करने के लिए जाते हैं।

अनीता शर्मा, बी. कॉम तृतीय वर्ष

2. ग्रामीण कृषि: गाँव नाली रोपा के संदर्भ में

हिमाचल प्रदेश उत्तरी भारत का एक पर्वतीय राज्य है, जिसका क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार हिमाचल में 89.96 प्रतिशत लोग अभी भी ग्रामीण जीवन व्यतीत करते हैं। हिमाचल प्रदेश के कुल क्षेत्रफल में से 10 प्रतिशत भूमि पर कृषि की जाती है।

वर्तमान समय में हिमाचल प्रदेश में लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि व बागवानी है।

मेरे गांव का नाम नाली रोपा है, जो हिमाचल प्रदेश के मण्डी ज़िले में स्थित है। यहां की कुल जनसंख्या 100 से 120 के आसपास है।

हमारे गांव के लोग कृषि आज तक पुरातन विधि से करते थे, लेकिन अब लोग आधुनिक तकनीक का भी उपयोग करते हैं। पुराने ज़माने में लोग सिर्फ अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए कृषि करते थे, लेकिन वर्तमान समय में लोगों ने इसे व्यवसाय के तौर पर अपनाया है, जिससे कृषि उत्पादों के साथ-साथ आय में भी वृद्धि हो रही है।

वर्तमान समय में एक सामान्य किसान भी औसतन 50-60 क्विंटल के आसपास सब्जी का उत्पादन करता है। सरकार की समय-समय पर अनेक प्रकार की कृषि योजनाएं शुरू होने से लोग लाभान्वित हो रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में किसान-बागवान नई-नई तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं तथा आधुनिक कृषि की ओर अग्रसर हैं।

कृषि का स्वरूप व कृषि के स्तर में परिवर्तन : लगभग दो दशक पूर्व लोग अपनी भूमि से सिर्फ 5-10 प्रतिशत आमदमी से प्राप्त करते थे लेकिन वर्तमान में नकदी फसलों के प्रचलन के कारण लोग 90 प्रतिशत तक आय प्राप्त कर रहे हैं। हमारे पूरे गांव से लाखों रुपए के कृषि-उत्पाद स्थानीय व बाहरी मण्डियों तक पहुंच रहे हैं, परिणामस्वरूप लोगों की आय में भी वृद्धि होना स्वाभाविक है।

वर्तमान में रासायनिक खादों के प्रचलन के कारण भूमि की उर्वरता पर प्रभाव पड़ रहा है, इसलिए सरकार जैविक खेती अपनाने को लेकर लोगों को जागरूक कर रही है। लोग भी जैविक खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं।



कृषि लोगों की आय का प्रमुख साधन है। परिवार के सभी सदस्य कृषि संबंधी कार्यों में हाथ बटाते हैं। लोग नकदी फसलों की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं, ताकि उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हो सके।

‘उन्नत खेती, खुशहाल किसान’; इस धारणा को मद्देनजर रखते हुए किसान-बागवान कृषि-बागवानी की अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे उनके उत्पादन में वृद्धि हुई है। उत्पादन अधिक होने से उनकी आय में भी वृद्धि हुई है। आय में वृद्धि होने से लोगों के जीवन-स्तर में सुधार हुआ है। इसलिए किसान ‘उन्नत खेती, खुशहाल किसान’ की इस धारणा को चरितार्थ कर रहे हैं।

सिंचाई व्यवस्था : गांवों में सिंचाई की उचित व्यवस्था न होने के कारण लोगों को वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। कृषि के क्षेत्र में भी आज के दौर में प्रतिस्पर्धा आ गई है। लोग अधिक उत्पादन और अधिक आय अर्जित करने की होड़ में हैं। इस पहाड़ी प्रदेश में सिंचाई के सीमित संसाधन होने के कारण लोग बारिश के जल व प्राकृतिक स्रोतों पर निर्भर हैं। इसलिए अक्सर यह देखा गया है कि लोग जल के प्राकृतिक स्रोतों को अधिक नुकसान पहुंचा रहे हैं, इससे पेयजल की गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। कई बार तो लोग पानी की आपूर्ति देने वाले पाइपों से ही पानी की चोरी कर लेते हैं, जिससे लोगों के घरों में कई दिनों तक पेयजल की आपूर्ति नहीं हो पाती है। स्थानीय लोगों को इस बारे में भी गंभीरता से सोच-विचार करना चाहिए।

कृषकों की राय: किसान साक्षात्कार – स्थानीय निवासी मंगल सिंह का कहना है कि वह गत 25 वर्षों से कृषि कर रहे हैं। उनका कहना है कि उन्होंने कृषि के उत्पादन तथा तकनीक में इन 25 वर्षों में अनेक परिवर्तन देखे हैं। मंगल सिंह का कहना है कि एक समय था जब लोगों को अपने कृषि-उत्पाद कई किलोमीटर दूर मुख्य सड़क मार्ग तक पीठ पर ढोकर पहुंचाने पड़ते थे, इस प्रकार मण्डियों तक पहुंचाने में काफी समय लगता था। अधिक समय लगने से कई बार तो फलों व सब्जियों में सड़न पैदा होती थी, इसलिए अच्छे दाम नहीं मिल पाते थे। उनका कहना है कि अब समय बदल गया है। सरकार ने किसानों-बागवानों को अनेक सुविधाएं देना प्रारम्भ कर दिया है। कृषि-बागवानी विभाग समय-समय पर कीटनाशक, खाद व अन्य सामग्री के साथ-साथ जागरूकता शिविर भी लगाती रहती है, जिससे किसानों को काफी फायदा मिल रहा है। उनका कहना है कि सरकारी योजनाओं से किसान काफी लाभान्वित हुए हैं तथा उनकी आय में भी बढ़ोतरी हुई है।



कृषि के क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता :

सिंचाई व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है।

कृषि-उपकरणों का सदुपयोग करने की आवश्यकता।

वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता।

उच्च किस्म व हाईब्रीड बीजों का प्रयोग करें।

संक्षेप में यह कहना उचित होगा कि हमारे क्षेत्र में कृषि का इतिहास बहुत पुराना रहा है, कृषि तकनीकों में कैसे परिवर्तन हुए तथा वर्तमान में अत्याधुनिक कृषि-तकनीकों से किस प्रकार किसान-बागवान लाभान्वित हुए हैं, हमारा गांव इस बात का साक्षी है। जय जवान! जय किसान!! जय विज्ञान!!!

मनीषा ठाकुर, बी.ए. अंतिम वर्ष

3. ग्राम संस्कृति के विविध पक्ष: विशेष संदर्भ— गांव गड़शाऊं

प्रकृति की गोद में बसे मेरे इस छोटे-से सुंदर गांव का नाम गड़शाऊं है। उपमण्डल बंजार की बाहू पंचायत के मध्य में स्थित (वार्ड नम्बर-दो) यह गांव भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत मनमोहक एवं खूबसूरत दृश्यों से परिपूर्ण है। मेरे गांव के लोगों की यह विशेषता है कि यहां सभी मिल-जुल कर रहते हैं। गांव के बीचों-बीच देवता जी का एक शोभनीय मंदिर है। इस मंदिर में स्वयं देवता श्री महाकाल पञ्जारी जी महाराज विराजमान हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से मेरा गांव अधिक विशाल

नहीं है परन्तु इसकी विविधता में समरसता इसे चार चांद लगा देती है।

जनसंख्या की दृष्टि से एक नज़र :

कुल आबादी : 158

कुल पुरुष : 55

कुल महिलाएं : 60



शाऊणी मेला

कुल बच्चे : 43 (18 वर्ष से नीचे)

हमारे गांव में लगभग 35 परिवार निवास करते

हैं तथा मकानों की संख्या 40 के करीब हैं।

मेरे गांव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लोगों की देव-संस्कृति पर अटूट आस्था है। यहां हर कार्य देवता की अनुमति से सम्पन्न किए जाते हैं तथा सभी लोग एक-दूसरे की मदद करते हैं। लोग प्रत्येक देव-कार्य, उत्सव-त्यौहारों एवं विशेष पर्वों को तन्मयता एवं प्रसन्नतापूर्वक मनाते हैं।

फाल्गुन मास में चार दिन फागली तथा श्रावण मास में पांच दिनों तक चलने वाला मेला लोग बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। बाहू पंचायत की फागली की धूम पूरे क्षेत्र में रहती है। दूर-दूर से लोग इस अनूठे व दैवीय त्यौहार को देखने के लिए आते हैं तथा खूब आनन्द उठाते हैं।

बाहू फागली : एक अनूठा संस्कृति – फाल्गुन मास के प्रारंभ के दिनों में मनाया जाने वाला यह तीन-दिवसीय त्यौहार देवता नारायण को समर्पित बेहद प्राचीन त्यौहार है तथा स्थानीय निवासी इस मेले की परम्पराएं सदियों से निभाते चले आ रहे हैं।



इस त्यौहार का प्रभाव उन समस्त गांवों में देखने को मिलता है, जहां पर विष्णु नारायण के दैवीय मोहरों का निवास है। फाल्गुन मास के प्रथम तीन दिन तथा हर तीसरे वर्ष, चार दिन यह त्यौहार मनाया जाता है। पारम्परिक रीति-रिवाजों को आधार मानकर यह उत्सव सदियों में लोगों द्वारा बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

इस त्यौहार में लोग शरूली नामक घास के पत्तों से चोलों का निर्माण करते हैं तथा प्राचीन काठ के बने मुखौटों को लगाकर नृत्य करते हैं। बड़ी नाटी का भी आयोजन किया जाता है, जिसका आप इस लिंक पर क्लिक करके आनन्द ले सकते हैं- <http://youtube/FrTZ-cxyua4> एवं यू-ट्यूब पर भी बाहू फागली सर्च कर सकते हैं।

हज़ारों की संख्या में लोग इस त्यौहार में शामिल होते हैं तथा देवताओं का आशीर्वाद लेते हैं।

हमारी संस्कृति, हमारी पहचान

पहाड़ों पर स्थित होने के कारण मेरा गांव समुद्र तल से लगभग 6000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। हम पहाड़ियों के लिए अपनी संस्कृति तथा परम्पराएं सबसे अधिक प्रिय हैं। देवताओं पर हमारी आस्था और श्रद्धा अतुलनीय है। हर एक



त्यौहार को मिल-जुल कर, बिना किसी भेदभाव के मनाना, हमारी संस्कृति और संस्कारों को उजागर करता है। जनवरी-फरवरी में बसंत पंचमी, मार्च में होली, अप्रैल में नवरात्र, जुलाई-अगस्त में शिव पूजन, सितंबर में ऋषि पंचमी, अक्टूबर में शारदीय नवरात्र, दशहरा, करवाचौथ, नवम्बर में दीपावली तथा दिसम्बर में बड़ा दिन और नववर्ष की तैयारी इत्यादि प्रत्येक मास गांव में विशेष पर्वों का सिलसिला लगा रहता है। इन पुरातन पर्वों से हमारी संस्कृति समृद्ध होती है।

पूरा भारतवर्ष सदियों से विविध प्रकार के मेलों-त्यौहारों एवं विशेष पर्वों का आयोजन करता आ रहा है। इन मेलों-त्यौहारों एवं विशेष-पर्वों के साथ-साथ अनेक ऐसे रस्मों-रिवाज भी हैं, जो हमारी पुरातन संस्कृति को जीवन्त रखे हुए



हैं। विवाह-शादियों की रस्में, मुण्डन संस्कार, देऊली, जन्म एवं मरण से संबंधित गतिविधियां इन परम्पराओं के विविध रूप हैं। हमारे पहनावे, खान-पान तथा रहन-सहन भी इन परम्पराओं का हिस्सा हैं। संस्कृति के ये सभी विविध आयाम हमें आपसी भाईचारा, प्रेम-सद्भाव तथा एकजुट होने का संदेश देते हैं। 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा को जीवन्त बनाते हैं। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है तथा इसके संरक्षण एवं



संवर्द्धन को लेकर हम हमेशा प्रयासरत् रहेंगे।

निष्कर्ष : गांव की भौगोलिक तथा आर्थिक स्थिति पर विस्तृत अध्ययन करने के बाद अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि गड़शाऊं गांव भौगोलिक दृष्टिकोण से अत्यंत मनमोहक और आकर्षक गांव है। इसकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी है।

जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से यह गांव उतना बड़ा नहीं है परन्तु इसकी संस्कृति पर चर्चा करने के बाद यह गांव सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध है।

मेरे गांव के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं तथा आजीविका का मुख्य साधन कृषि होने के कारण खेतों में सारी फसलें, दालें तथा फलों का उत्पादन करते हैं।

मेरे गांव के लोगों का देवी-देवताओं पर अटूट आस्था और विश्वास है तथा किसी भी शुभ कार्य को आरम्भ करने से पूर्व देवी-देवताओं की अनुमति से ही करते हैं। यह यहां की परम्परा है।

गड़शाऊं गांव, बाहू पंचायत के मध्य में स्थित है, और यहां की अधिकतर जनसंख्या काष्ठ निर्मित पुराने घरों में रहती है। यहां की साक्षरता दर 90 प्रतिशत है। गांव के सभी लोगों का आपस में मिलजुल कर रहना इस गांव की सबसे बड़ी विशेषता है।

जितेन्द्र कुमार, बी.कॉम, तृतीय वर्ष

Principal with non-teaching staff



From Left To Right : Sh. Kamli, Sh. Joginder, Sh. Mohar Singh, Sh. Nihal Singh, Smt. Sandhya Devi, Sh. Pyar Chand, Dr. Joginder Thakur (Principal), Smt. Dhanvanti Devi, Sh. Bhim Sain, Sh. Jeet Ram

Principal with CSCA Members



From Left To Right : Sh. Kanish Rana (Secretary), Miss Lancy (Joint Secretary.), Dr. Joginder Thakur (Principal), Sh. Shaurya (President), Miss. Suman Verma (Vice President)

